॥ श्रीः ॥

होली चौतालसंग्रह ।

भगत भगवानदासकृत ।

जिसमें

दिलबहार मज़ेदार सामयिक होली, सोहर, भजन,
कवित्तादि अत्यन्त रोचक रसिकोंके
विनोदार्थ वर्णित हैं ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम) यन्त्रालयमें

'अष्टमावृत्ति'

मुद्रितकर प्रगट किया ।

मार्गशीर्ष संवत् १९६१, शके १८२६.

सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है.

भूमिका ।

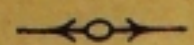

सब सज्जन पुरुषोंको विदित हो कि, इस ग्रंथमें "होळी व चौताळ व फगुआ व भजन व कवित्त व सवैया व सोहर व संगीत व ध्रुपद व मळार व खेमटा व ठुमरी व बारहमासा" ये सब गानेवाळी चीजें छाँट २ कर लिखी हैं और बनाये हैं. हर शौकीन मित्रळोगोंके वास्ते इस ग्रंथमें रामावतार व कृष्णावतारका गुणानुवाद लिखा है "टेढ़ो सूधो रामका भजन करना चाहिये जो जैसे गावै उसको तैसेही फल मिलता है" और सब सज्जन पुरुषों व संतोंसे हमारी कोटिशः विनती है कि, जो कोई भूळचूक होय सो सँभार लेयँ मैं बुद्धिमें निहायत नादान हूँ और इस ग्रंथ बनानेके वास्ते सेठ खेमराज श्रीकृष्णदास "**श्रीवेङ्कटेश्वर**" (स्टीम्) यन्त्राळयाध्यक्षने मेरेको कहा था और कृपासागर पंडित श्रीकामताप्रसाद तथा पण्डित श्रीइन्द्रदत्त संतनप्रतिपाळक और पण्डित रामअवतार शुक्ल तथा पण्डित भगवान्दत्त शुक्ल परोपकारी हमारे खास ग्रामके हैं और मुन्शी भगवान्प्रसाद हमारे उस्ताद हैं, बाबूनन्दन बडे प्रियमित्र हैं इन सबकी कृपासे भगत भगवानदास वल्द सुखराज मुराई जिळे जौनपूर चकबढवल निवासीने बनाय इस ग्रंथका नाम "**होली-चौतालसंग्रह**" रक्खा है मिती माघ वदी ४ गुरुवार संवत् १९५० तारीख २५ जनवरी सन् १८९४ ई० के रोज. अबकी बार अच्छी २ चीजें नई लिखी गई हैं देखनेसे माळूम होगा. अब मैं भूमिकाको समाप्त करके सज्जन पुरुषों व संतोंको प्रणाम व पैलगी करता हूं कि, मेरी मूर्खताको माफ़ करना इस पुस्तकको उक्त सेठजीके सिवाय अन्य लोग छापनेका इरादा न करें ।

आपका—**भगवानदास.**

indianmanuscripts.com

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ होली चौतालसंग्रह ।

त्रिभंगी-छन्द ।

समुझिय जगमें को फल मनमें हरिसुमिरनमें दिनभरिये। झगरो बहुतेरो घेरु घनेरो मेरो तेरो परिहरिये ॥ मोहन बनवारी गिरिवरधारी कुञ्जविहारी पग परिये। गोपिनको संगी प्रभु बहुरंगी होरी चौताल हिये धरिये ॥

दोहा-प्रथमहिं सुमरि गणेशको, शारदको शिरनाय। होली औ चौतालको, ग्रंथ कहौं मनलाय ॥ अरजहमारी सुनहु प्रभु, कृष्णचन्द्रमहराज। लज्जा मेरीराखिये, गोपिनके शिरताज ॥ मैं अजान नादानहौं, तुम हो परमसुजान। होली औ चौतालको, दीजै प्रभु मोहिं ज्ञान॥ विप्रनको परणामकर संतनको करजोरि। कृपादृष्टिकरियेसबै, मतिमोरी है थोरि ॥ लीजै सबै सँभारि तुम, भूल चूक जो मोरि। बुद्धि हीन जानों नहीं, मैं विनवों करजोरि॥ जिलाजौनपुर मोर है, चकबढवल है ग्राम। जन्म मुराईवंशमें, भगवानदास है नाम ॥ बम्बई शहर परदेशमें, बनौ ग्रंथ इक नाव। भई कृपा भगवन्तकी, चली जगतमें नाव ॥ दीनबंधु करुणायतन, जो मोपर अति नेहु। नाथ विमलपदकमलअति, भक्ति पदारथ देहु ॥ ८ ॥

चौताल ।

तेरे चरणनकी वलिहारी महेश पियारी ॥ टेक ॥ हिम-गिरि जन्म लिये जगतारनि कीन्ह तपस्याभारी ॥ वारह-वर्ष पारथिव पूजे वरपाये त्रिपुरारी ॥ महेश पियारी ॥ १ ॥ सुमिरौं आदि तुम्हैं जगतारनि फगुआ रचौं धमारी ॥ द्वै कर जोरि विनय करौं तुमसे मोरे कंठकी हो रखवारी ॥ महेश पियारी ॥ २ ॥ राजा दक्ष यज्ञ इक ठान्यो शिव आयसु नहिं पाई ॥ वरजत शंभु सती नहिं मानत राजादक्षकी यज्ञ विगारी ॥ महेश पियारी ॥ ३ ॥ वन्दौं आदि तुम्हैं जगतारनि सुर नर मुनि त्रिपुरारी ॥ तुलसिदास वलि आश चरणकी तुम राखो लाज हमारी ॥ महेश पियारी ॥ ४ ॥ १ ॥

शिवपूजत जनकदुलारी गौरि शिव पूजैं ॥ टेक ॥ फल औ फूल दूव दधि अक्षत कर कंचनकी थारी ॥ कंचनथार कपूरकी वाती मानौं ले मंडप नियरानी ॥ गौरि शिव पूजैं ॥ ॥ १ ॥ पैठि पताल पूजैं वम्भोला वरमोहिं दे भगवान ॥ अंग विभूति गले मृगछाला मानो शेपनाग लपटान ॥ गौरि शिव पूजैं ॥ २ ॥ खाँड चिरौंजी शिवमनहिं न भावे नायेध-तूरेमें डेरा ॥ शीश गंग विधुभाल विराजत शिव शृंगी नाद वजाई ॥ गौरि शिवपूजैं ॥ ३ ॥ शंभु उमा गणेश मना-वों वरमोहिं देहु भवानी ॥ तुलसिदास प्रभु आश चरणकी तुम प्रगट होहु भवानी ॥ गौरि शिवपूजैं ॥ ४ ॥ २ ॥

श्रीराम लिये अवतार सुरन हरषाने ॥ टेक ॥ अनँद बधाव अवधपुर बाजै सखियन मंगल गाई ॥ विप्र बुलाइके वेद उछाहत कर कंचन देत लुटाई ॥ सुरन हरषाने ॥ १ ॥ भई अति भीर धीर राजाघर राम देखन सब आये ॥ राम-को रूप कहाँ लगि वरणौं मोसे उपमा वरणि नहिं जाई ॥ सुरन हरषाने ॥ २ ॥ पुरवासी सब मगन भये हैं घर घर नाच कराई ॥ जहाँ देखो तहाँ थेइक थेइक मानो इन्द्र उतरि पुर आये ॥ सुरन हरषाने ॥ ३ ॥ धनि धनि हो तुम मातु कौशल्या रामको गोदखेलाये। धनि तुलसी धनि २ राजा दशरथ धनि हौ कौशल्या माई ॥ सुरन हरषाने ॥४॥ ३ ॥

कान्हा वंसी वेणु बजाई सखी सब आई ॥ टेक ॥ वंसी बजाय अपने वश कीन्हों सब सखियन वेल्हमाई ॥ चहुँ दिशि सखि सब घेरि लियो है कान्हा भूलिगई चतुराई ॥ सखी सब आई ॥ १ ॥ आसपास ललिता औ राधे गाल मिसे मिलि आई। वंसी बजावैं कान्हा मन पछतावैं राधे वंसी लीन्ह चुराई ॥ सखी स० ॥ २ ॥ वंसी हमारी देदेव राधे हीरा मोती जडाई ॥ वंसी तुम्हारी कान्हा हम नहिं लीन्हा तुम झूठे चोरी लगाई ॥ सखी सब आई ॥ ३ ॥ वंसीकर न्याव तबै निपटी है जब अइहैं यशोमति माई ॥ सूरश्यामसे कहत राधिका कान्हा बरबश रारि मचाई ॥ सखीसबआई ॥ ४ ॥ ४ ॥

बहियां छोड़हु कृष्णमुरारी घड़ा शिर भारी ॥ टेक ॥ ऐसो ढीठो कान्हा गोकुलमें पकड़ि लियो मोरी सारी ॥

नन्द दोहाई मैंतो वेरीवेरी वरजौं तुम छोड़हु यौवन सारी ॥ घड़ा शिरभारी ॥ १ ॥ एक तो लाज दुजे गोकुल विच तीजे रैन अँधियारी ॥ हाथ जोरि कान्हा पैयां परतु हौंनहिं जानौं तुम घटवारी ॥ घड़ा शिरभारी ॥ २ ॥ जो मन होसो करो कन्हैया यमुना देहु उतारी ॥ घाटकै नैया कान्हा अव घट लावत तुम चढो सखि प्रेमपियारी ॥ घड़ाशिरभारी॥ ॥ ३ ॥ कृष्णमुरारी प्रभु तुम्हरे दरशक नैया है वहु तेरी ॥ सूरश्याम रस वश भई ग्वालन कान्हा तुमसेगई मैं तो हारी ॥ घडा शिरभारी ॥ ४ ॥ ५ ॥

सखि उमडा यौवन दुख देय रे विना वनवारी ॥ टेक ॥ छोटे वलमकी नारि सयानी लखि लखि मरत निहारी ॥ लोग कहैं जनु व्याह भये हैं मैं जानत वारि कुमारी ॥ विना वनवारी ॥ १ ॥ वारे वलमकी नारि विरानी मस्त फिरे अलसानी ॥ नाहक व्याह पिता मोर करगये वरु नैहर रहत्युं कुमारी ॥ विना वनवारी ॥ २ ॥ हरवा कोर करै छतियाँपर विन पिय नीक न लागे ॥ सोरहों शृँगार उतारि धरो सखि मानो देत पियाजीको गारी ॥ विना वनवारी ॥ ३ ॥ पियापिया कहि धाय भवनमें कोयलकी अनुहारी ॥ निशि दिन व्याकुल रहत राधिका मोर प्रीतम सुरति विसारी ॥ विना वनवारी ॥४॥ छन अकुलाय सेज छन आँगन छन चाढ़िजात अटारी ॥ द्विज हरिचरण शरण सतगुरुके हरिके चरण वलिहारी ॥ विना वनवारी ॥ ५ ॥ ६ ॥

सँवला मुख रहत निहारी गेंद गहि मारी ॥ टेक ॥ मैं यमुना जल भरन जात पनिघटवा ठाढ़ कन्हाई ॥ संग की सखी सब दूर निकल गईं मैं तो इतउत रहति निहारी॥ गेंद गहि मारी ॥ १ ॥ श्रीवृंदावनकी कुंजगलीमें धै बहियाँ झक झोरी ॥ एक तो सखी लिये गोदमें बालक दूजे घडा शिर भारी ॥ गेंद गहि मारी ॥ २ ॥ करसे पकड़ि उमड़ि मुख चुम्बत लोचन रहत निहारी ॥ राह चलत मोहिं कंकड़ मारत मानो देत हजारन गारी ॥ गेंद गहि मारी ॥ ३ ॥ ऐसो है ढीठ कुँवर कन्हैया पकड़ि लेत मोरि सारी ॥ द्विज हरि-चरण शरण सतगुरुके हरिके चरण बलिहारी ॥ गेंद गहि मारी ॥ ४ ॥ ७ ॥

कब अइहैं कुँवर कन्हाई कलक रहिजाई ॥ टेक ॥ रोम रोम रसछाय रहे मोरी चोलिया रहे दरकाई ॥ अंग विभूतिलगाय योगिनि भई हम तुमहीं पर ध्यान लगाई ॥ कलक रहिजाई ॥ १ ॥ आपुतो जाय द्वारका बैठे हम विरहिन तलफाई ॥ ऐसे बेदरदीके दरद न लागत मैं तलफके रैन बिताई ॥ कलक रहिजाई ॥ २ ॥ तुमतो साँझ दिवसके अन्दर लिखि पातियां भेजवाई ॥ मैं विरहिन वहीं देश बसतु हौं जहां काग़ज़मोल बिचाई ॥ कलकरहिजाई ॥ ३ ॥ उठोंतो श्याम श्याम कहि बैठोंसोवों टेरलगाई ॥ भगवानदास कहत करजोरे कब अंगमेंअंगमिलाई ॥ कलक रहिजाई ॥ ४ ॥ ८ ॥

मैंतो ऐसे बेदरदीसे हारि गयो फुलवारी ॥ टेक ॥ झुकत झुकत मैं गयो फुलवरियां झुकवत डार नवाई ॥ चंपाकर द्वै फूल लरकि गये दोनों योवना गहे वनवारी ॥ गयो फुलावारी ॥ १ ॥ अंग मोरी तोरी कलाई सुरकाई करिहइयाँ दाग लगाई ॥ सर्वस रस मोरे यौवनाके ले गये मोरी वदन निहारी ॥ गयो फुलवारी ॥ २ ॥ मैं वाला कर हाल न जानोंकच्ची कली एक तोरी ॥ ऐसे बेदरदीके दरद न लागत मोको काम विवशकरिडारी ॥ गयो फुलवारी॥३॥ कच्ची कली रस लेगये मोहन न जानी मर्म हमारी॥भगवानदास कहत कर जोरे मैं तो कोटि यतनकै हारी ॥ गयो फुलवारी ॥ ४ ॥ ९ ॥

एक साँवली सुन्दरि नारि नयन गहि मारी ॥ टेक ॥ कालो चीर नहिं पहिरो सखी रे साँवर वदन हमारी ॥ साँवरे वदनपर चुनरि सोहत द्वै यौवना उठे मतवारी ॥ नयन गहि मारी ॥ १ ॥ एक माँगन मैं माँगो सखीरी उपजै अंग तुम्हारी ॥ कंचन कलश उठे देहिन पर दिन चारीके देउ उधारी॥नयन गहि मारी ॥२॥ मांगेके तुम मांगो हो मोहन मारो प्राण हमारी॥ये यौवना मोरे सैयांके खेलौना ओ तो तु महुँसे अधिक पियारी॥नयन गहिमारी॥ ३॥लरकिपरे काहू नहिं पूँछि है देउ निहोरा लगाये॥सूरदास रसवश भये मोहन हम राखौं मान तुम्हारी ॥ नयन गहि मारी॥४॥१०॥

निरमोहिया श्याम हमारे लिखा नहीं पाती॥टेक॥नैहरकी

सुधि भूलिगई है सासुरकीसुधि लागी ॥ बिन पिय सासुर नीक न लागत दूनो यौवना उमडि आये छाती ॥ लिखा नहिं पाती ॥ १ ॥ पिय पिय रटत भई मैं काली कोयलकी अनुहारी ॥ पियवाकी बोली पपीहरा बोलत मोर कैसे बिते दिन राती ॥ लिखा नहिं पाती ॥ २ ॥ सोई रह्यो स्वपन इक देख्यों स्वपनेमें मोर पिय आये ॥ जाग उठ्यो कतहूँ कोउ नाहीं मैं तो सपटि गई दोनों पाटी ॥ लिखा नहिं पाती ॥ ३ ॥ छिन अलसाय सेज छिन आँगन छिन चढि जात अटारी । सूरश्याम रसवश भई ग्वालिनि गलियाँ फिरै रसमाती ॥ लिखा नहिं पाती ॥ ४ ॥ ११ ॥

मोरे पियवा विदेशवामें छाये विरह दुख दीन्हा ॥ टेक ॥ कवरे व्याह विदेश निकलि गयो तनिक सोच नहिं कीन्हा॥ अवहीं गवनकी नारि चुचुहिया अंग अंग रस भीना ॥ विरह दुख दीन्हा ॥ १ ॥ गई जवानी यौवन नहिं माने दिन दिन बाढ़े दूना ॥ नया माल तैयार भये हैं तोरी छतियांमें उठत नगीना ॥ विरह दुख दीन्हा ॥ २ ॥ बिना नयनके लोग दुखित हैं बिना द्रव्य बलहीना ॥ बिना पुरुषकी नारि दुखित है फागुन मस्त महीना ॥ विरह दुख दीन्हा ॥ ॥ ३ ॥ निशिवासर मैं खडी अँगनमें वाट मैं जोहों सलीना॥ भगवानदास सेज है सूनी पिया आनति है एहि जीना ॥ विरह दुख दीन्हा ॥ ४ ॥ १२ ॥

वंसी वाजि रही चहूँओरि कहैं राधा गोरी ॥ टेक ॥

नन्दलाल वृषभानु लाडिली संमत प्रथम करोरी ॥ मोर-मुकुट मकराकृत कुंडल को छवि वर्ण करोरी ॥ कहैं राधा गोरी ॥ १ ॥ वंसी तान गान किंकिणि धुनि सुनि सुनि ध्यान टरोरी ॥ झनक घनक घन घुँघुरू बाजत खग मृग मोहि लियोरी ॥ कहै राधा गोरी ॥ २ ॥ केशर रंग अंग तकि मारत आनन अवीर मलोरी ॥ श्रीवृषभानुसुता सखियन सँग श्रीपती बाँह गहोरी ॥ कहै राधा गोरी ॥ ३ ॥ त्रिविध समीर तीर यमुनाके वहुविधि फाग मचोरी ॥ भगवानदास कहत कर जोरे आनँद सकल भयोरी ॥ कहै राधा गोरी ॥ ४ ॥ १३ ॥

होरी खेलत जनकदुलारी हाथ पिचकारी ॥ टेक ॥ रूपेके थार गुलाल भरे हैं कंचनकी पिचकारी ॥ गोरे वदन नीलांवर ओढ़े मुखपर वेशर धारी ॥ हाथ पिचकारी ॥ १ ॥ पीताम्वरकी कछनी काछे शिरमें मुकुट सँवारी ॥ भरत लक्ष्मण रंग वनावत जहँ अतरनकी अधिकारी ॥ हाथ पिचकारी ॥ २ ॥ जाको भेद वेद नहिं पावत शेष शारदा हारी ॥ लक्ष्मण संग फिरैं महलनमें लै अवीर मुख मारी ॥ हाथ पिचकारी ॥ ३ ॥ गलियन गलियन धूम मची है फाग खेलैं नरनारी ॥ भगवानदास कहत करजोरे हरिचरणन वलिहारी ॥ हाथ पिचकारी ॥ ४ ॥ १४ ॥

सखि लागे फागुन मास वलम्ह सुधि छोरी॥टेक॥जस असवार सजै घोडाको गहै वाग और डोरी ॥ तैसहि नारि

यौवनदूनो पालत मातुपिताकी चोरी॥वलम्ह सुधि छोरी १ जैसे सुनार गढै सोनाको रत्ती खाले जोरी ॥ तैसाहिं नारी कामरस जोगवत अंग अंग झकझोरी॥वलम्ह सुधि छोरी॥ ॥२॥ जस नइ नारि चली पानीके झुमकके गागर वोरी ॥ अँगियाके विच दूनो यौवन हलकत दोनों हंस मुरैलाकी जोरी ॥ वलम्ह सुधि छोरी ॥ ३ ॥ जैसे कली लगे चंपामें तोरत कै कुँभिलाई ॥ भगवानदास कोई तोरत नाहीं दूनों यौवनाके करत वरोरी ॥ वलम्ह सु० ॥ ४ ॥ १५ ॥

उर वसिगये कुँवर कन्हाई सखी वेलम्हाई ॥ टेक ॥ मथुरा कान्हा जन्म लियो है गोकुल वजत वधाई॥कंसासुर पूतनाको पठायो दूध पिआवन आई॥ सखी वेलम्हाई॥१॥ कंसासुर इक दैत्य पठायो पंडितरूप वनाई ॥ रसना दीन्ह मरोरि मुरारी रोवत मथुरा जाई ॥ सखी वेलम्हाई ॥ २ ॥ मारि अघासुर आदिक मोहन कुंजमें रास मचाई ॥ राधा ललितादिक सखियाँ सव छीन रुचिर दधि खाई ॥ सखी वेलम्हाई ॥ ३ ॥ मथुरा जाई कंसको माऱ्यो मातुपिता को छोडाई ॥ भगवानदास कहत करजोरे सखी नित-उठि फाग मचाई ॥ सखी वेलम्हाई ॥ ४ ॥ १६ ॥

गोरी करवै कौन वहाना गवन नियराना ॥ टेक ॥ सव सखियनमें चुनरी मैली भई दूजेपिया घर जाना ॥ तीजे डरमोहिं सासु ननँदकी चौथे पिया मारे ताना ॥ गवन निय राना॥१॥प्रेम नगरकी राह कठिन है जहँ रंगरेज सयाना ॥

एक बोर मोरी चुनरीमें देदेव तासों पिया पहिचाना॥गवन नियराना॥२॥राहमें चलत मिले हैं जहँवाँ सतगुरु नाम बखाना॥उनकी कृपा होइहै जब मोपर लगिजै हैं मोर ठिकाना गवन नियराना ॥३॥ गुणी साथ कछु गुण नहिं सीख्यों अवगुण हृदय समाना ॥ कहत कबीर सुनो सतगुरु तुम फिरी न बहुरि जग आना ॥ गवन नियराना॥ ४॥१७॥

सखि फागुन मास जनाई श्याम नहिं आई ॥ टेक ॥ जबसे श्यामगये परदेशवा छन छन जिय अकुलाई ॥ भोजन भवन सबै हम त्यागे कुलकी लाज गँवाई ॥ श्याम नहिं आई ॥ १ ॥ कौनसी चूक परी मनमोहन जो मेरी सुरति भुलाई ॥ हमको त्यागि विदेश सिधारो मथुरा नगर बसाई ॥ श्याम नहिं आई ॥ २ ॥ नाहिं कोइ आवत जात पथिक तहँ लिखि पाती भिजवाई ॥ भूलिगई सब नेहकी बातें कहांगई चतुराई ॥ श्याम नहिं आई॥३॥ चोवा चन्दन ना कछुभावै ना हँसबोल सुहाई॥भगवानदास कहत कर जोरे कान्हा बेगि मिलो तुम आई॥श्याम नहिं आई॥४॥१८

कैसे बीतैं फागुन दिनराती पिया नहिं आये ॥ टेक ॥ उडत गुलाल लाल भये बादर रहत सकल ब्रज छाई ॥ आप तो जाय बसे कुबरी सँग मोहिं विरह वियोग जनाये॥ श्याम नहिं आये ॥ १ ॥ विकल भई राधेऔ ललिता रहत नयन जल छाये ॥ कान्हाकी सुरति अँगियां बिच शालत ऊधो तरसिके रैन बिताये ॥ श्याम नहिं आये ॥२॥निशि

वासर सब मस्त फिरत हैं छन छन विरह जनाये॥जो मन-मोहन आपु न अइहैं विधि नाहक नेह लगाये॥श्याम नहिं आये॥३॥सुन्दरि नारि फिरै मद माती पपिहा शोर मचाये॥ गाये तो रामशरन शिवशंकर विधि झूठै शोर मचाये॥ श्याम नहिं आये॥ ४॥ १९॥

सैयाँ विदेश सिधारे कासे खेलौं होरी॥ टेक॥ सासु ननँद दुख देत है दारुण सवति करत वरजोरी॥ दुख कर मूल पडौस मिले सखि कैसेक वास वसोरी॥ कासे खेलौं होरी॥१॥खान पान मोहिं कछु न सोहाई भूषण भार लगोरी॥चिन्ता अनल दहन निशिवासर नयनन नीर बहोरी॥ कासे खेलौं होरी॥ २॥ नहिं आये नहिं पाती पठाये के हि विधि धीर धरोरी॥ फागुन मास वितैं ऐसे सखि कौन उपाय करोंरी॥ कासे खेलौं होरी॥३॥जो विधिना लिखि दियो लिलारे सो नहिं टार टरोरी॥भगवानदास कहत कर जोरे पिय सहजहि आइ मिलोरी॥कासे खेलौं होरी॥४॥२०

गोरिया तिरछी नजर तोर भाला वान काहे मारे॥टेक॥ योगी मुनिन कर ध्यान छुटा है कामिनि नयन निहारे॥कम रकि पतरी नयनकर तिरछी गोरी यौवना है जुलुम कटारे॥ वान काहे मारे॥ १॥ सुरति देखाय के मुर्छित कियेऊ सुधि नाहिं रहत हमारे॥ सैननसे नयना दोनों मोहे गोरी चितवनसे जीव मारे॥ वान का०॥ २॥ जैसे मनारी जग-तके मोहत वैसे मोहनी डारे धनि तोर बाप धनि महतारी

गोरी धनि है ससुरे तुम्हारे ॥ वान काहे मारे ॥ ३ ॥ की विधिना तोहिं गढिके वनाये की सांचामें डारे ॥ भगवानदास कहत करजोरे गोरी दुनियाँ वश कर डारे ॥ वान काहे मारे ॥ ४ ॥ २१ ॥

गोरिया भइहै यौवनवा की वारी तो अवही कुवाँरी ॥ ॥ टेक ॥ खेलतथी अपनी लड़िकैयां सव सखियनमें उघारी ॥ जव छातियन पर उमडे यौवनवा तुम कपड़ा पहिरि लेहु दुलारी ॥ तो अवहीं कुवाँरी ॥ १ ॥ व्याहेका वाजा बाजन लागे अँगनामें होत तयारी ॥ सव सखियां मिलि साज सजन लागे मोर सासुरेका होत तयारी ॥ तो अवहीं कुवाँरी ॥ २ ॥ हमरे संगकी सखी सहेली रचि रचि माँग सँवारी ॥ आगे आगे मोर सैयाँ चलत हैं मानों पीछेसे डोलिया हमारी ॥ तो अवहीं कुवाँरी ॥ ३ ॥ लै कर डोला ससुरे घर पहुँचे भइ कोहवर की तयारी ॥ भगवानदास कहत कर जोरी गोरिया पिया सँग सोवत अटारी ॥ तो अवहीं कुवाँरी ॥ ४ ॥ २२ ॥

सखी विन पिया विरह सतावै नैहर नहीं भावै ॥ टेक ॥ सांई की नगरी परम अति सुन्दर जहां कोऊ आवै न जावै ॥ चन्द्र और सूर्य्य पवन नहिं पानी मानो को सँदेश पहुँचावै ॥ नैहर नहीं भावै ॥ १ ॥ आगे चलत पन्थ नहीं सूझत पाछेसे दोष लगावै ॥ ससुरे जाऊं कौन विधि सजनी सखि विरहा जोर जनावै ॥ नैहर नहीं भावै ॥ २ ॥ विन सतगुरु

कोउ हितू न अपना कौन राह वतलावै ॥ अवकी मिलन सजनका कठिन है मानो विधना आनि मिलावै ॥ नइहर नहीं भावै ॥ ३ ॥ पाँच पचीसहिको समुझावै चितका रंग वतावै ॥ लैके कवीर ज्ञानपिचकारी भगवानदास भरि रंग चलावै ॥ नैहर नहीं भावै ॥ ४ ॥ २३ ॥

तू चेतौ चतुर सयाना काल नियराना ॥ टेक ॥ वाप आजा परआजा चले गये ऐसे तुमको जाना ॥ धन दौलति अरु कुटुम कवीला मानो कोई संग नहिं जाना ॥ काल नियराना ॥ १ ॥ नेकी वदी जु ईश्वर देखैं जिसको तूने भुलाना ॥ पाप पुण्य हैं संगी तेरा मानो तेकर वदला भराना ॥ काल नियराना ॥ २ ॥ करना होय सो करले प्यारे नहीं तो फिर पछताना ॥ फिर फिर जन्म न होत जगतमें मानों उहवाँ न रहत निशाना ॥ काल नियराना ॥ ३ ॥ हंसा रहा तो भागि चला गया दिहियां माटी मिलाना ॥ भगवानदास कहत कर जोरे तुम अवसे करहु ठेकाना ॥ काल नियराना ॥ ४ ॥ २४

देखो देशमें रेल चलाई खवर पहुँचाई ॥ टेक ॥ ऐसी अकिल लगाई फिरंगियाँ धुँवाकी गाडी वनाई ॥ पांच-कोश पर स्टेशन वनाई अरु तापर तार लगाई ॥ खवर पहुँ-चाई ॥ १ ॥ चलत रेल चिकार महाअति जव कल देत घुमाई ॥ भांजत पलक फरक योजनपर जाके पवन वेग नहिं पाई ॥ खवर पहुँचाई ॥ २ ॥ जवतक रेल प्रचण्ड भई है सव रोजिगार मिटाई ॥ लैकर माल धनीकर वोझत

मानो कोस अधन्नी लगाई॥खवर पहुँचाई॥३॥ मुये गरीव धनी सुख पावत देशको अन्न मगाई ॥ भगवानदास कहत कर जोरे कभी ऐसी राजनाहिं आई॥खवर पहुँचाई॥४॥२९॥

दोहा ।

साजा वाजा राग मिलि, गावत सन्त सुजान ॥ भूल चूक कर अक्षरै, कीजै एक मिलान ॥ फागुनमास वसन्त है, सव गावत होली चौताल ॥ डफ मंजीरा झाँझ अरु, मृदंग हाथकरताल ॥ चौताल पचीस वर्णन करो, सव संतन शिर नाय ॥ भगवानदास करजोरि कह, दीजै ग्रंथ वनाय ॥ दीनानाथ दयालु प्रभु, पूरण कीजै आस ॥ भगवानदास करजोरि कह, दूरि करो तनु त्रास ॥ कीजै चित्त सोई तरे, ज्यहि पतितनके साथ ॥ मेरे गुण अवगुणनको, गिनौ न गोपीनाथ ॥

होली ।

मेरी कान्हा उतारो गगरियाँ लपकि ॥ मेरी नाजुक वाहियाँ तो गई है लचकि ॥ टेक ॥ एक तौ यमन जल पावन दूजे भरत उठावत ऊँच चढैया ॥ कठिन कठोर पंथ विच कंकड़ सहि न जाय गति उदय करैया ॥ धरत धराणि पगु परत चमकि ॥ १ ॥ एक तौ भारी भार शिर ऊपर दूजे पवन बहै पुरवैया ॥ मेरी कुसुमकी सारी भिजतु है जल भरने जाय हमारी वलैया ॥ माथेकी वेंदिया तो गई है खसकि ॥ २ ॥

ब्रजके लोग विलोकि हँसतु हैं इत उत डोलौं करि चतुरैया ॥ लजा लजावन जाउँ वहुरि घर वनवारी वृषभानु दोहैया ॥ तासे कि अँगिया तो गई है मसकि ॥ ३ ॥ साँवली सूरति मोहनी मूरति विसरत नाहिं मोहिं रामदोहैया ॥ सूरश्याम मोहिं आनि मिलावो वै न मिले मेरे चितके हरैया ॥ जासे मिटत मेरे जियकी कसकि ॥ ४ ॥ १ ॥

अबीर गुलालसे भाल लालरंग केशररंग भरे ॥ टेक ॥ जलदश्यामकामिनि द्युति दामिनि चितवत चित्त हरे ॥ १ ॥ कुंजभवन ते उठे भोरहीं श्यामा औ श्याम खरे ॥ २ ॥ सूरश्याम नित फाग मचावत कुंजकदम्ब तरे ॥ ३ ॥ २ ॥

पिचकारीसे मुरारी भरि मारीरे ॥ टेक ॥ भरि पिचकारी मेरे मुखपर मारी भीजि गई तन सारीरे ॥ १ ॥तुम तो ढोटा नन्दमहरके हम वृषभानु दुलारी रे ॥ २ ॥ वरजत हौं वरजो नाहिं मानत हमहुँ देहौं अब गारी रे ॥ ३ ॥ श्रीवृन्दावनकी कुंजगलीमें वरजो न मानै गिरिधारीरे ॥ ४ ॥ सूरश्याम नित फाग मचावत वहियाँ पकड़ि दीन्हीं गारी रे ॥ ५ ॥ ३ ॥

अब काहे वचन कठोरे। कैकेयी तवतो कह्यो कि राम प्रिय मोरे ॥ टेक ॥ जेहि मुख राम लषण वन दीन्हों जिह्वान गिरि गई तोरे ॥ १ ॥ भरतके राज राम वनवासी लाज न लागत तोरे ॥ २ ॥ रामसे कहुरे अयोध्यामें रहहीं राज करैं सुत तोरे ॥ ३ ॥ गावैं गुदर मति देवन फेरी कैकेयीके अपयश देरे ॥ ४ ॥ ४ ॥

ये दोउ खेलत फूल फाग री ॥ टेक ॥ आये वसंत सकल वन फूले कोयल बोलत सरस राग री ॥ उमँगे आनन्द अवध अधिकाने भूप द्वार होरी होन लागरी ॥ १ ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ मध्य सुरन भय मधुर राग री ॥ सुनत श्रवणहारि विधि उठि धाये नहिं भावत जप जोग जाग री॥२॥ इतसे राम सखा जुरि आये सिय समाजरंग अमित गागरी ॥ मचे कीच मग बीच अवधपुर मुनि मज्जत मानो मकर प्रयाग री ॥ ३ ॥ भीजि गई तन चीर चादरी पटजामा अरु माल पाग री ॥ महाराज महारानीको भयो एकरँग अरुण बाग री ॥ ४ ॥ ललकारत सिय ललित लाडिली पकड़ि पानि पट झमकि झागरी ॥ लपकि झपकि गईं लपटि राम जीसे पिय प्यारीजीको परम भाग री ॥ ५ ॥ जो अलि ओट अटन चढ़ि बैठी रति मलीन वै अति उजागरी ॥ उझकि उझकि विधुवदन देखावत हँसत खसत मानो डसत नागरी ॥ ६ ॥ फगुआ देहु मँगाय लाल मोहिं जनकसुता कह सुनहु नाथजी ॥ तुलसिदास अनुकूल जानि जिय लियो सबै वर मूल भाग री ॥ ७ ॥ ५ ॥

ब्रजमें खेलन मति जाव हो लाल कोइ रंग डारि दइ हैं ॥ टेक ॥ ब्रजकी नारि सबै मदमाती तुमको पकडि लिअइ हैं ॥ तुम्हैं पर रंग डारि दइ हैं ॥ १ ॥ छीन लेइ हैं वनमाल मुरलिया शिरसे चुनर ओढ़इ हैं ॥ लाल कोई रँग डारि दइ हैं ॥ २ ॥ बेंदी भाल नयन बिच काजर नकबेसर पहिरइ हैं ॥

लाल कोई रँग डारि दइ हैं ॥ ३ ॥ सूरश्याम वरजो नाहिं मानत रोवतही फिरि अइ हैं ॥ लाल कोइ रँग डारि दइ हैं ॥ ४ ॥ ६ ॥

वंसी वजाय पिआय जहर कछु करिगये मोहिं कन्हैया ॥ ॥ टेक ॥ रोम रोम विष भीन गई है कासों कहौं दुख कोइ न सहैया ॥ है कोई वाको आनि मिलावै औषधि हमको कोइ न देवैया ॥ ऐसी डसी नहिं देत लहर ॥ १ ॥ श्रवण न सुनों नयन नहिं देखों नहिं सूझतु है कछु काह रे मैया ॥ श्रीवृंदावनकी कुंजगलीमें ढूँढि फिरी वावा कि दोहैया ॥ कहाँ गये सुत नंदमहर ॥ २ ॥ प्रेम सहित हरि लाइ मिलो है सव देखी धेनु चरावत गैया ॥ सूरश्याम गर लाइ लियो है सखियन विच नृत्य करैया ॥ झरिगइ विष नहीं लाग गहर ॥ ३ ॥ ७ ॥

साँवरेजीको चरित सुनो री ॥ एक समय व्रजकी वनिता सव हरषि चलीं जलओरी ॥ मज्जन हेतु धँसी यमुनामें कोइ साँवरी कोइ गोरी ॥ करैं जलमें झकझोरी ॥ १ ॥ ताही समैं व्रजराज साँवरो जाय तहाँ पहुँचोरी ॥ लेकर चीर कदमके ऊपर चढ़ि गये नन्दकिशोरी ॥ मुदित आनन्द भयो री ॥ ॥ २ ॥ ताही समय पट ढूँढन निकली कहुँ नहिं दृष्टि परोरी ॥ तामें एक सखी उठि वोली देखो कदमकी ओरी ॥ चीर सव जाय धरो री ॥ ३ ॥ तिनमें एक चतुर व्रजवनिता प्रेम अधिक रस वोरी ॥ शीश नवाय कहत पट दीजै हा हा करत वहोरी ॥ श्यामसे दोउ करजोरी ॥ ४ ॥ वोले श्याम मधुर रस-

बतियाँ तुम सब लाज तजो री ॥ लाज छाँडि सन्मुख सब आवो नख शिख सब देखौंरी ॥ टेक यह जानत मोरी ॥ ५ ॥ हिलि मिलि फाग परस्पर खेलत इत साँवर उत गोरी ॥ सूरश्याम आनन्द भयो है सुधि बुधि सब विसरोरी ॥ जगतमें होइ रही होरी ॥ ६ ॥ ८ ॥

साँवरेजीसे कहियो मेरी ॥ टेक ॥ निशिदिन व्याकुल फिरत राधिका विरह व्यथा तनु घेरी ॥ श्याम तुम्हें ढूँढत कुंजनमेंशीश लटा लट छोरी ॥ चलोरे हो हो हरि होरी ॥ १ ॥ भूषण वसन सबै तजि दीन्हें खान पान विसरोरी ॥ विभूति रमाय योगिनि बनि बैठी तेरो ध्यान धरोरी ॥ वेगि किन आवो किशोरी ॥ २ ॥ शीश नवाय चरण गहि लीन्हों कर विनती कर जोरी ॥ हरि ऐसी चूक परी कहँ मोसन प्रीति पाछिली छोड़ी ॥ सुरत क्यों न लीन्हीं मोरी ॥ ३ ॥ रोम रोम विष भीन रहोरी विध मेरी वैर परो री ॥ वाल करेजा ज राय दियो है अब मैं काह करोंरी ॥ धीर नहिं जात धरोरी ॥ ४ ॥ सूरश्याम हरिसे जाय कहिये अवध आश रहि थोरी ॥ प्रान दान दीजै यदुनन्दन कीरति गावों मैं तोरी ॥ श्याम फिर आवो बहोरी ॥ ५ ॥ ९ ॥

ब्रजमें हरि होरि मचाई ॥ टेक ॥ इतसे आवत नवल राधिका उतसे कुँवर कन्हाई ॥ खेलत फाग परस्पर हिलि मिलि शोभा वरणि नहिं जाई ॥ नंदघर वजत वधाई ॥ १ ॥ राधाजू सैन दियो सखियनको झुंड झुंड ह्वै धाई ॥ लपटि

झपटि गइ श्यामसुंदरके कर धरि पकडि मँगाई ॥ लालजीको नाच नचाई ॥ २ ॥ छीन लई मुरली और पीताम्बर शिरसे चुनर ओढ़ाई ॥ वेंदी भाल नयन विच काजर नकवेसर पहराई ॥ सुघर नई नारि वनाई ॥३॥ सुसकत हो मुख मोरि मोरिके काह भई चतुराई ॥ काह भये तेरो नन्दवबाजी कहाँ यशोमति माई ॥ लालको न लेत छोड़ाई॥४॥ वाजत ताल मृदंग झाँझ डफ मंजीरा सहनाई॥उड़त गुलाल कुमकुमा केशर रहत सकल व्रजछाई ॥ मनो मेघवा झरि लाई॥५॥फगुआ लिये विन जाने न देइहौं करो तुम कोटि उपाई॥सूरश्याम वलि आश चरणके तुम वज्रचोर चोराई॥ वहुत दिन दधि मोरि खाई ॥ ६ ॥ १० ॥

देदीजोआली वंसी हमारी प्यारी॥टेक॥ यह वंसी अनमोल राधिका हीरा लगे आरी आरी॥फणिपर सहसमणिकी वनी है शब्द सुनावे न्यारी न्यारी॥वंसी मेरी प्राणपियारी ॥१॥ का जानौं तोरि वाँसकी वँसिया कहवां छोडे वनवारी ॥ जहवाँ भुले तहाँ जायके ढूँढो हमतो नारि गवाँरी ॥ एक पोर वंसी तुम्हारी ॥ २ ॥ तुम्हरे दगन कुछ माल नहींहै हमरे यही धन भारी॥पाये हो तो देदेव राधिका वार वार वलिहारी कहैं राधासे मुरारी ॥ ३ ॥ ॥ हँसके वोली चतुर राधिका तनिक नाचो गिरिधारी ॥ मुरली मनोहर हम देइदेवैं लेइ लो रासविहारी ॥ लषण उर वसत मुरारी ॥ ४ ॥ ११ ॥

वरजोरी यशोदा जी कान्हा ॥ टेक ॥ मैं यमुनाजल

भरन जातरी मारग निकसो आना ॥ वरजतरी मोरी गागरी फोरी ले अबीर मुख साना॥सखी सब देतीहैं ताना १॥ ताही समय आये नँदनन्दन आवत ऐसन ठाना ॥ ये सब मैया मोको बहुत खिझावैं नैनन देइ देइ सैना ॥लूटि आई हैं डरोना ॥ २ ॥ मेरो लाल पलनामें झूलै बालक है नादाना ॥ ये कहँ जानै रसकी बतियाँ नहीं जानै खलक जहाँ ना ॥ भूल रहो हो तुम ज्ञाना ॥ ३ ॥ तुम साँचो तुम्हरो मन साँचो हमहीं करत बहाना॥ सूरश्याम वज्रवासिन त्यागे व्रजमें अनत न जाना ॥ करो अपना मनमाना ॥४॥१२॥

साँवरेको अरज लागि मोरी ॥ टेक ॥ घाट बाट घर बाहर मोहन करत फिरत होरी होरी ॥ कौनसी है वृषभानु नन्दिनी को व्रजराज किशोरी॥कही मानों सखि मोरी॥ १॥ मैं दधिवेचन जात वृन्दावन पहिरि कुसुम रँग सारी॥बीच मिल्यो मोहिं नन्दनँदन री बहियां पकड़ि मरोरी ॥ मुकुट मुरली धरि तोरी ॥ २ ॥ एक दिना मोहिं आय अचानक मोहन आन मिल्यो री ॥ लिपट झिपट सारी मोरी फारी अँगिया केशर रँग बोरी ॥३॥ मेरे मुख मीजत रोरी ॥शेष गणेश महेशकी दाया शारदकी मति भोरी ॥ चिरंजीव रहै यह जोरी ॥ ४ ॥ १३ ॥

रघुवरजीसे वैर करैना ॥टेक॥ सौ योजन मर्याद सिंधुकी सो कोइ बांधि सकै ना, ताहि बांधि उतरे रघुनन्दन संग

भालु कपिसैना ॥ समर कोई जीति सकै ना ॥ १ ॥ होरीसी लंक जराय दई है अब तुम भागि बचै ना॥ करिकरि दाँव वीर सब थाके पावक प्रबल बुझैना॥जुगुति कछु एकलगै ना॥२॥ तुम जीवत अहिवात हमारो सांची कहौं पिय बैना ॥ कीन्हें रारि नहीं बनि अइहै तासे जाय मिलै ना ॥ भागि तिहुँलोक बचैना ॥ ३ ॥ मैं तिरिया बहु भाँतिसिखावों निश्चल कानकरै ना ॥ तुलसीदास मूढ भयो रावण फूटे हियके नैना॥ ताहि कछु सूझि परै ना ॥ ४ ॥ १४ ॥

श्रीगणेश सोहाग मेरो दिल मैं तो फागुन पियेके मनावतहो ॥ टेक॥ पहिले मैं पूजौं गौरीको गणपति जिन मोरा रखले सोहाग ॥१॥ सोनेके छत्र धरौं शिर ऊपर फूलन मंदिर छवावतरे ॥ २ ॥ चन्दन अक्षत वेलकै पाती नित उठि शिवके चढ़ावतरे ॥ ३ ॥ सूरश्याम बलि आश चरण की हरिके चरण चितलावतरे ॥ ४ ॥ १५ ॥

मैं तो कृपानिधि शरण तिहारी ॥टेक॥ छत्रपती राजा दुर्योधन लगी सभा अति भारी ॥ बैठे भाँति भाँतिके राजा तिन विच करत उघारी ॥ कहा प्रभु मरजी तिहारी ॥ १ ॥ मैं तो भरोसे तिहारे रहति हौं सदाही कुंजविहारी ॥ आवो वेगि दया अब कीजै नाहीं तो होत उघारी ॥ लाज अब जात मुरारी ॥ २ ॥ चीर प्रवेश भयो प्रभु तुरतै बढ़ो वसन अधिकारी ॥ खैंचत खैंचत भुजवल थाके बैठे मनै मनहारी॥छाँडिदइ द्रुपद कुमारी ॥३॥ सूरदास संतनके रक्षक राधा रमण मुरारी ॥

आय दयालु भये दासनपर राखी लाज हमारी ॥ करी हरी ब्रजकी तयारी ॥ ४ ॥ १६ ॥

होरी खेलत अवधविहारी ॥ सानुज लिये संग मुरारी ॥टेक॥क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडलकाम कोटि वलिहारी ॥ लक्ष्मण हाथ रंग लिये ठाढ़े रामहाथ पिचकारी॥ १॥ वाजत ताल मृदंग झाँझ डफ और वजत करतारी ॥ उड़त गुलाल घटा घन घोरन लै अबीर मुख मारी ॥ २ ॥ हिलि मिलि फाग परस्पर खेलत शिव समाधि है टारी ॥ श्यामल गौर किशोर मनोहर प्रीति रंग अति भारी ॥ ३ ॥ इतमें राम सखा सब छिरकत उतमें राजदुलारी ॥ केसरि कीच मची गलियनमें तुलसिदास वलिहारी ॥ ४ ॥ १७ ॥

पवनतनय आजु धूम मचाई ॥ टेक ॥ वारिधि नाँघि गये लंका महँ तहँ पर जाय छपाई ॥ व्याकुल देखि सिया को जबहीं मुँदरी दिये गिराई ॥ सिया हिय हर्षि उठाई ॥ ॥ १ ॥ मुँदरी देखि सिया अति भरमी मनमहँ तर्क बढ़ाई ॥ सुमिरनकीन्ह प्रगट तब भयऊ सियसन आशिष पाई ॥ धस्यो तब उपवन जाई ॥ २ ॥ उपवन जायके पेड़ उपाऱ्यो रावण पकरि मँगाई ॥ पूँछ बाँधि पट तेल चुभायो पावक दियो लगाई ॥ चढ़ेउ कपि गढ़पर धाई ॥ ३ ॥ कूदि फाँदिके पुर सब जारत दशमुख हिय अकुलाई ॥ लागी आग जरत पुर सगरो विलपत लोगलुगाई ॥ हाय हाय लंक समाई ॥ ४ ॥ १८ ॥

उद्धवजी कब ऐहैं कन्हाई ॥ टेक ॥ कातिक चन्द्र उजियारी अगहन यह अरज हमारी ॥ पूसेमें जो मिलै मुरारी तनुकी व्यथा सब जाई ॥ कहत हम शीश नवाई ॥१॥ माघमास मनको समुझावै फागुन मदन सतावै ॥ चैतैंमें फूली फुलवारी चातक शोरमचाई हमैं निशिदिन तरसाई ॥ २॥ वैशाख सखी ब्रज सूनो जेठ विरह दुख दूनो आषाढै आश लगाईके बैठी कब मिलिहैं यदुराई ॥ सकल दुख जात पराई ॥३॥ सावन सखी सगुन विचारी भादौंमें सेज सवाँरी॥ भगवानदास कहत करजोरे कुँवार मिलै प्रभु आई ॥ कहत सब हाल बुझाई ॥ ४ ॥ १९ ॥ इति होली समाप्ता ॥

अथ फगुआ।

सुमिरहु राम आनन्दा हृदय भर ॥ अवधपुरी श्रीधामा जहँ जन्मलियो श्रीरामा ॥ सरयू बहत जल नीरा ॥ दुख पाप न रहे शरीरा ॥ संतनकी भक्तिपियारी तहँ तहँ देखा हृदय विचारी॥जहँ जहँ संतनका डेरा॥तहाँ तहाँ प्रभु हेरा॥ हरिणाकुशके मारे ॥ प्रहलादहिं लीन्ह उवारे॥ मारे कौरव सौ भैया ॥ तब लंकाके कीन्ह चढ़ैया ॥ उतरे सागर तीरा॥ अति बाँधे सेतु गँभीरा ॥ तापर सेना उतारे ॥ सब निश्चर जायसंहारे ॥ लंकापतिको मारे ॥ देवतनकी बन्दि छोड़ाये॥ राज्य विभीषणको दीन्हा ॥ तब उत्तर गवन करि लीन्हा॥ राजा जनककी बारी ॥ गौतमकी नारि पियारी ॥ पायन परत जँजीरा ॥ होरी गावैं दास कबीरा ॥ १ ॥

राधा खेलै रँग होरी ॥ पहिरे सुआ सारी॥रजसेंदुरमांग सँवारी॥पायल बिछुआ बजावैं ॥ तव शब्द झमाझम छावैं ॥ राधा ब्रजललितासंगाकरगहेमथानीअंगा॥गावैंगीतरसाला दधिवेचनचलींब्रजबाला ॥ तहँवीचमिलेनँदलाला ॥ तवरंग सवोंनेडाला ॥ पीछेकान्हभरेपिचकारी ॥ तवरंगसवनपर-डारी ॥ हे हो कुञ्जविहरी॥तुम घरघर करतहोआरी॥दहिया-छोरि छीनकै खाये ॥ दिन चारिके मर्द कहाये ॥ राधा चली-पराई ॥ तवखेदाकुँवरकन्हाई॥कान्हगहिमाराकनकपिचका री॥तव भीजिगई तनु सारी ॥ नन्दमहरकेवारे।नितरंगहमैं पर डारे ॥ साँवरके करे भरोसे । निति रगर मचाये मोंसे॥न न्दरायके वारे ॥ तुम गौवनके रखवारे॥भीतर मातुयशोदारा नी॥वनवेचेदहीमें पानी॥अहोश्याम मैं हारे । राधाजी शरण तिहारे ॥ वेणु बाँसुरी जाय वजाया ॥यमुना तट फाग मचा-या ॥ राधा औ ललिता गोरी ॥ अति रुचि फाग खेलोरी ॥ हियसे सूरदास पद गाया ॥ गोपिन सँग फाग मचाया ॥ २ ॥

सुनो जनककी बतियाँ सखिया ॥ राजाजनकजी प्रण इक ठान्यो द्वारे धरे पिनकिया ॥ देश देशके भूपति आये टारे न टरे पिनकिया ॥ बाणासुर रावण चलि आये ओहु भगे अधिरतिया ॥ मुनिके संग दो बालक आये उन धरि तोरा पिनाकिया ॥ तुलसिदास प्रभु आश चरणकी वरेसिया यहि भँतिया ॥ ३ ॥

सिया डारे राम गले जैमाला ॥ दूलह तौ श्रीराम बने हैं लछिमन देवर सहवाला ॥ समधिनि तो बनि मातु कौशल्या दशरथ समधी महिपाला ॥ जिनके शंभु बराती आये ओढ़े दिगम्बर मृगछाला ॥ तुलसिदास बलि आश चरणके सुर बोलैं जय जय जयकाला ॥ ४ ॥

जनकके आँगनमें भीर भारी॥रथ तुरंग चढ़ि चले बराती औ गजकी असवारी ॥ झाँकि झरोखे परमसुन्दरी आवत अवध विहारी ॥ जुट रनिवास जनक गृह आये बोलैं बचन विचारी ॥ बाँधत राम सियाजीके कंकण गहि गहि गाँठि सँवारी ॥ सब रनिवास विहँसिके बोलीं देत लालजीको गारी ॥ जो यह राम छुटै नहिं कंकण हारिजाहु महतारी॥ इतना सुनत जनकजी बोले क्या सकुचावो नारी ॥ जेहिं भुजबल शंकर धनु तोरा कंकण कौन विसारी ॥ इतना सुनत सिया सकुचानी तनुकी दशा विसारी ॥ देन दान सखियाँ सब लागीं तुलसिदास बलिहारी ॥ ५ ॥

रथपर निरखत जात जटाई॥काकी नारि नाम तेरो क्या कौन हरे तोहिं जाई ॥ उत्तर दिशि इक नगर अयोध्या दशरथ सुत रघुराई ॥ ताकी नारि नाम मोर सीता हरे निशाचर जाई॥ चोंचनमारि महायुध कीन्हो रथसे दीन्ह गिराई ॥ अग्निवाण तब मार निशाचर पंख चोंच जरि जाई ॥ तुलसिदास प्रभु मिले रामके कहव कथा समुझाई ॥ ६ ॥

पवनसुत कौन दिशासे आये ॥ केकर पुत्र केकर तुम

पायक के तोहिं कुँवर पठाये ॥ अंजनीपुत्र रामकर पायक लक्ष्मण कुँवर पठाये ॥ कहँ छोड़े राम कहाँ छोड़े लक्ष्मण कहां मुद्रिका पाये ॥ वन छोड़े राम वनै छोड़े लक्ष्मण वनै मुद्रिका पाये ॥ तुलसिदास वलि आश चरणकी सियाकी खवर जनाये ॥ ७ ॥

वँसी किसने वजाया हो मधु यमुनाकेतीर वारे कन्हैया॥ टेक॥वंसी शब्दिया गै गोकुलामें आयल आज अहीर ॥१॥ सोरहसै ग्वालिन किये शृंगार दधि वेचत यमुनातीर ॥ २ ॥ इधरसे आई राधे हो उधरसे आये कान्ह ॥ ३ ॥ कान्ह मारै पिचकारी हो राधे तो झोके अवीर ॥ ४ ॥ एक तो राधा सुन्दरी हो दूसरे परा अवीर ॥ ५ ॥ कान्हके भीजै जोड़ा जामा राधे के चोली चीर ॥ ६ ॥ दोनों शहरके अंत में भई चोहनकी हील ॥७॥ राधेकृष्णके फगुआ हो गावै दास कवीर ॥ ८ ॥

मोहन मोहिं जाय दे यमुना पानी ॥ टेक ॥ शिरपर घड़ा घडापर झारी तापर अभरन भारी ॥ १ ॥ हथवा चुनी गुलेल लगाये गागरमें हनै निशानी ॥ २ ॥ जाही वदे तुम रोके टोको सोउ मरम हम जानी ॥ ३ ॥ दूर भये कोइ देखत हैं हम घर जाव निकारी ॥ तुम तौ ढोटा नन्दमहरके हम वृषभानुदुलारी ॥ ४ ॥ सूरश्याम वलि आश चरणकी तुम जीते हम हारी ॥ ५ ॥ ९ ॥

यमुना विच नैया लगाये कन्हैया तनी दहीके कार

टेक ॥ काहे काठकी नैया वनी है काहे लागी करुआरी ॥ चन्दन काठकी नैया वनी है सोने लगी करुआरी ॥ के के वाही नैया चढ़तु है के है खेवनवाला ॥ राधा रुक्मिणि नैया चढ़तु है माधौ खेवनवाला ॥ सूरश्याम सव नृत्य मचावैं गोपी और सव ग्वाला ॥ १० ॥

नदिया वही चली जलधारा ॥ टेक ॥ जैसे पुरइन जलमें उपजै जलैमें करे पसारा ॥ उनके पात पानी नाहिं लागै ढरकि परै जैसे पारा ॥ जैसे सती चलै सत ऊपर पिया वचन नाहिं टारा ॥ आप तरै औरोंको तारै तारै कुल परिवारा ॥ जैसे शूर चढ़ै रण ऊपर पीछै पगु नाहिं टारा ॥ उनके चिन्ता लगी लड़नेकी प्रेम मगन ललकारा ॥ भवसागर इक नदी वहुत है लाख चौरासी धारा ॥ सूरश्याम वलि आश चरणके संतो उतरिगये पारा ॥ ११ ॥

indianmanuscripts.com

कवित्त ।

घर तजोंवन तजों नागर नगर तजों, वसीराम सव तजि काहू पै न लजिहौं ॥ देह तजों गेह तजों नेह कहो कैसे तजों; आज काजराज वीच ऐसी साज सजिहौं ॥ वावरे भये हैं लोग वावरी कहत मोको, वावरी कहेसे मैंहू काहुन वरजिहौं ॥ कहैया औ सुनैया तजों वाप अरु भैया तजों, दैया तजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजिहौं ॥ १ ॥

वंसीकी धुनि सुनि आईं तजि लाजकाज, साईं ब्रजराज साज समय विते गये॥ मंद मुसुकायकै लोभाय मन हाय हाय, रूप रस प्याय प्रेम चितवन चितै गये॥ कहैं वलदेव नीच वाणसी है मारी तान, लेके तुम प्रान लाज हमरी रितै गये॥ टोहना मिलत कछु चाहना हमारी श्याम, मोहनी दिखाया रूप मोहन कितै गये॥ २॥

वाजी वौरानी वाजी देखबेको द्वार धाई, वाजी अकुलानी सुनी वँसी वंसिधरकी॥ वाजी ना पहिरैं चीर वाजीना धरैं धीर, वाजिनके उठी पीर विरहानल भरकी॥ वाजी ना वोलैं वाजी संग लागी डोलैं वाजी, करतहैं किलोलैं वाजी सुधि नाहिं घरकी॥ वाजी कहैं वाजी वाजी वाजी कहैं कहां वाजी, वाजी कहैं वन वाजी वंशी गिरिधरकी॥ ३॥

जाहि हाथ धनुष चढायोहै सीतापति, जाहि हाथ रावण संहारि लंक जारी है॥ जाहिहाथ तारे औ उवारे हाथ हाथी गहि, जाहि हाथ सिंधु मथिलक्ष्मीकोनिकारीहै॥ जाहि हाथ गिरिउठाय गिरिवर गिरिधारीभयो, जाही हाथ नन्द काज नाथ्यो नाग कारी है॥ मैंहूँ तो अनाथ हाथ जोरि कहौं दीनानाथ, वाही हाथ मेरो हाथ गहिवेकी पारी है॥ ४॥

सवैया।

आइ हो आजु नई ब्रजमें दधि वेचन जाहु तो जाने न पैहो॥ लेहुँ चुकाइ सवै दिनकी रस खानि भरी मनमें पछतैहो॥ तेरी न चेरी न तेरे ववाकी तु क्या मुझे घेरिके पेरि

लड़ैहौ गोरस चाहो तो खाहु लला जोपै वो रस चाहो तो जियत नपैहौ ॥१॥ कंसके राजमें दुंद नहीं वरजोरे लला एक बुन्दन पैहौ ॥ खैंचतहौ गहिके अँचरा चुनरी फटि है यशुदा लग जैहौ॥ तोरत हार हजारनके पिय दंड लगा मनमें पछितैहौ ॥ जो इक मोतीको मोल करौ तो नन्द यशोदा विचैले न पैहौ ॥ २ ॥ ५ ॥

एक समैं गृहसे निकसी तनु पहिरे चीर गुलावकी सारी॥ ताही समै मनमें होइगे हम देखनगे नन्दलालकीवारी ॥ ताहीमें कान्ह भुकान छुपान तो धरत बाँह गहिये मोरी सारी॥सोर करौं सखि लाज मरौं विनती करिये नाहिं छोड़त सारी ॥ काची कली एक तोरि लिया तेहि कारन बाँह मरोरि के भारी ॥ आगि लगै ब्रजके वसवे एक फूलके कारण लाखन गारी ॥ ३ ॥ ६ ॥

सब देशनमें द्विज देवनमें नरनारिनमें बहु मोदप्रकाशै॥ यश मान बढ़ै सत मंगल होय सदा तेहिके सब दुःख विनाशै ॥ सत भूषण वस्त्र सुभोग अनंद मिले बहु भाँति सदा रिपु त्रासै॥नाहिं पूरव पुण्य विना मिलिहैं मँगला यह मंगल देइ सुवासै ॥ ७ ॥

चित्त मलीन रहै नितही तनु व्याधि बढै ज्वरपित्तसहावै ॥ मोह कुसंग तृषा सूक रोग दहै तनु दाह व्यथा दरशावै॥ बंधु त्रिया स्वजनाजनके सुत स्वामि कुटुंब वियोग करावै॥ प्रेम हुलास विनाश करै यह पिंगल पाक दुसाह सहावै॥८॥

धन धान्य सुमोद सुतव्रत है यह दशा धन देई सदाई ॥ यश कीर्ति अपार सुभोग सदा गजवाहन सौख्य सदा सरसाई ॥ सुरभी गुण ज्ञान वढ़े मनमें रिपु नाश करै धन वायुकी नाई ॥ नृपमान करैं सव कष्ट हरैं यह धान्य दशा विन पुण्य न पाई ॥ ९ ॥

राजसभा सनमान वढ़ै गृह मंगल होइ सदा सुखकारी ॥ वाणिज वृद्धि सुलाभ सदा दुख दारिद दोष समूह प्रहारी ॥ भद्रिका भौनमें भद्र करै सनमान वढैरिपु प्रीति विचारी १०॥ मित्र कुटुंव सुखी करि है जहिके यह भद्रिका पाक निहारी ॥

धनमान विनाश करै सिगरो नृपते दुख होइ सुकीरति नाशै ॥ सुत भृत्य कलत्र वियोग करै नृपता घटि है दुख ते तनु त्राशै ॥ नयनोदर दंत वढ़ै रुज कान हृदय दुख दाह वढै मनकाशै ॥ कलंक लगै परनारिन मैं उलका यह खाक कुबुद्धि प्रकाशै ॥ ११ ॥

पाती जो आवत प्रेम पगी सुख छाय रहै लखिके मन माँहीं ॥ प्राण निछावर हैं मम वापर और नहीं कछु मो ढिग पाँहीं ॥ मूल सजीवन खाय जिये वह देखि जिये ज्यहिं-के जिव नाहीं ॥ अव एती कहौं तुम सों सजनी तुम राखिये पीर हमारि सदाहीं ॥ १२ ॥

क०—कमल उछाह जैसे सूरज प्रकाश होत कुमुद उछाह जैसे चन्द्रमा परसते॥ भौंरन उछाह जैसे आगम वसन्त जानि, मोरन उछाह जैसे वरषा सरसते ॥ हंसन उछाह जैसे मानसर

बीच होत, साधन उछाह इच्छा आवत अरसते ॥ सबको उछाह यहि भाँतिकर होत अहै, हमरो उछाह प्यारी आपके दरश ते ॥ १३ ॥

हाथीके दाँतनके खेलौना बने भाँति भाँति, बाघनकी खाल तपी शिव मन भाई है ॥ मृगनकी खालनको ओढ़त हैं योगी यती, छेरिहौं की खाल थोर पानी भरि लाई है ॥ साबरकी खालनको बाँधत सिपाही लोग, गैंडन की खाल राज रावण सोहाई है ॥ कहै कवि दयाराम रामके भजन विन, मानुषकी खाल कछु काम नहिं आई है ॥ १४ ॥

स०—सावन मास विदेश पिया मेरे अंग पै बूँद परै सरसी ॥ कामने जोर करचो सजनी बँद टूटिगये छतियाँ दरसी ॥ करके सिनगार अटा जो चढ़ी मुख देखत हाथ लिये अरसी ॥ पपिहा कह्यो पीउ रहो नहिं जीउ गिरी गिरा खाइ कबूतरसी ॥ १५ ॥

छाये पिया परदेश सखी अब जोबन जोर सतावत है ॥ जबसे गये मोरी सुधहू न लीन्हीं विरहा दुख उपजावत है ॥ निर्दइ दई अब कैसे करौं मोहिं निशिदिन क्यों तलफावत है ॥ पंख नहीं उड़ि कैसे मिलौं अब धीर नहीं जिय लावत है ॥ १६ ॥

क०—जोरि जोरि जोरि दृग मोरि मोरि मोरि मुख, चोरि चोरि चोरि वित चखन चितै गई ॥ झुकि झुकि झाँकनझरोखा झाँकि झाँकि जात, ताकि ताकि तीक्षणमें तारतन दै गई ॥

सुमति प्रवीण मुखचन्द्र सो उदोत होत, मृदु मुसुक्यानिमें चकोर चित्त कै गई ॥ लुकि लुकि लोचन सकोचन सो हेरि हेरि, लागीसी लगायकै लपेटि मन लैगई ॥ १७ ॥

स०—ऐसी न देखी सुनी सजनी घन बाढ़त है जो वियोगकी बाधा ॥ त्यों पदमाकर मोहनको तवते कल है न कहूँ पल आधा ॥ लाल गुलाल घला घलमों दृग ठोकर दै गइ रूप अगाधा ॥ कैगई कैगई चेटकसी मन लैगई लैगई लैगई राधा ॥ १८ ॥

छाँडि पतिव्रत प्रीति करी निबही नहिं तौन सुनी हम सोऊ ॥ मौन भये हरि योंही पच्यो सहनेई पच्यो जो कह्यो कछु कोऊ ॥ साँची भई कहनावति वा कवि ठाकुर कान सुनी हुति जोऊ ॥ माया मिली नहिं राम मिले दुविधामें गये सजनी सुन दोऊ ॥ १९ ॥

जो करतार रची सो सही विधि और विचार अकारथ ही है ॥ वेद पुराण पुराणें सुनी सब कोऊ कहै यह गाथ सही है ॥ अन्तर बीच पच्यो तौ कहा भयो मोमन तो तुव साथ रही है ॥ जादु गुड़ी कितहूँ उड़ि डोर उड़ावन हारके हाथ रही है ॥ २० ॥

नैनके बाण लगे जबते तबते कल है छनहूँ नहिं प्यारी ॥ भगवानदास नहिं चैन पड़ै दिन रैन रहै हाय बेइकरारी ॥ का तकसीर भई हमसों जो बिसारि दई सुधि हाय हमारी ॥ लोग सबै यों कहैं सुनु प्यारी किवाजतहैदोउहाथनतारी२१

पपिहा अरु मोर करैं अति शोर उठी घनघोर है श्याम घटा॥ चमकै बिजुरी अति जोरभरी अरु लागी झरी लिये ठाटठटा॥ शोक भरी पछतावै खड़ी विरहागि जरी शिर खोले लटा॥ कराहि के हाय करै पछिताय भगवानदास देखि सूनी अटा॥ २२॥

अच्छीसि नारी अटा चढि कै सखी पीतमकी नित वाट निहारै॥ लै अरसी करमें सजनी वह मोतिनकी शिर माँग सँवारै॥ जात मरी विरहानलमें अब काहेन कन्त हमैं निरवारै॥ भगवानदास न मानै पपीहा घर पीउ नहीं पिउ पीउ पुकारै॥ २३॥

काहुने हाथ लियो करताल वजावत श्याम खड़ी जो अगारी॥ काहुने झाँझ मृदंग मँजीरन और सितार वजावतहारी॥ काहुलिये करमें घुँघरू सुरचंग सुहात है कोइकतारी॥ भगवानदास कहै करजोरि सो होत महा उर आनँद भारी॥ २४॥

अथ भजन।

दयानिधि तेरी गति लखि न परै॥ धनसेधर्म धर्मसेअधरम अकरम कर्म करै॥ टेक॥ पितावचन टारै सो पापी सो प्रहलाद करै॥ ताकी बन्दि छोडावनको प्रभु नरहरिरूप धरै॥ १॥ एक गऊ जो देत विप्रको सो सुरलोक तरै॥ कोटि गऊ राजा नृग दीन्हें सो भवकूप परै॥ २॥ गुरु वसिष्ठ अतिहीगुण आगर रुचि रुचि लग्न धरै॥ सीताहरण मरण

दशरथको विपतिमें विपति परै ॥ ३ ॥ वेद विदित तेरो यश गावै सो वलि यज्ञ करै ॥ ताको बाँधि पताल पठायो कैसेक सूर तरै ॥ ४ ॥ १ ॥

उठाय लीन्हों गिरिवर वायें कर इन्द्रमन दहत रखन ब्रज चहत हो ॥ टेक ॥ इन्द्र रिसाने ब्रज घवडाने आरत वच न पुकारो नन्दजीको वारो माता गुणभारो देखत घनाकरो सोवचायो ब्रज हो ॥ १ ॥ ब्रजहिं वचायो इन्द्र सुनि पायो अति व्याकुल उठि धायो देखि छकित रहत चरणन गहि रहत सो जान्यो प्रभु आपु प्रगट भयो हो ॥ २ ॥ ग्वालवाल लियेसु मनमाल सव लालन डर डालो यशुदाके लाल तुम करो निहाल कहै मातादयाल सो हमारो स्वामी हो ॥ ३ ॥ २ ॥

उठाया चाहैं चटक अवध वारो हो ॥ धनुप अतिविकट खड़े हैं ताके निकट ॥ टेक ॥ अतिसुकुमार कुमार साँवरो कोटि मदन मद वारो ॥ क्रीटकर लटक कुँवर करकरक भुकुटि टेढी मुकुट सियाके प्यारे हो ॥ १ ॥ भाल विशाल लाल उर मालै गलै वैजंती है विशाल कटि कसेहै फेंटो कौशल्याजीके ढोटो नयन दुख मेटो जनकपुर हो ॥ २ ॥ सुन्दर लोल अमोल कानमें शपथ कपोल न आन अलख केरी झलक परत नहिं पलख उछलि छवि छलकि ललकि उर हो ॥ ३ ॥ चितवन चारोंओर चानसी चोरनचित चखचोर मंदमुख हँसत हियमें हठि वसत न काको रूप धसत गजेन्द्रगामी रघुकुलकमल पतंग वाँकुरो क्षत्रिय कुल शिरमौर

देखि थिर न रहत ये तोरन धनु चहत कहत रघुराज हमारो स्वामी हो ॥ ४ ॥ ३ ॥

शंकर शिव बंबंभोला कैलासपती महराज राज ॥ टेक ॥ ओढे सिंहछाल गले व्यालमाल लोचन विशाल सब लाललालजाकेचन्द्रभालसुन्दरविराज ॥ १ ॥ बसहातु रंग छवि कोटिअंग लीन्हें गौरिसंग जाके शीशगंग एकरंग ढंगमें करत काज ॥ २ ॥ अतिरंगरूप भये छाँह धूपनिरखत स्वरूप भये चकित भूप करि डिमिक डिमिक डमरू वाजै ॥ ३ ॥ कहै दास दीन कर जोर जोर देव भक्ति दान रखो मान मोर अब चरण छोडि मैं कहां जाव ॥ शंकर ॥ ४ ॥ ४ ॥

संगीत—माई बजत बधाई आजरे ॥ आनँदतिलकगुरुमुनिन सहित श्रीदशरथजी दरवाररे ॥ तकधिलान् धिधि कर तर धिन्ना धिधि कर तर तुम कर तर धिन्ना ताता थूथू तननन घटत घटत मृगतानरे ॥ १ ॥ सारी गम पाधि निधि रिसिगम रस तीन तान तीती तननननन सात सुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना गावत गुणीजन सुधारिरे ॥ २ ॥ मंगल सजनी निछावर करति तिय मुख चुंबन अरु लेत बलैया तुलसिदास भये सुभग प्रगट श्रीरामचन्द्र अवतार रे ॥ ३ ॥ ५ ॥

भजन—खलक यह रैन का सपना, समुझ मन कोई नहीं अपना, चला है मोहका धारा, बहा सब जातसंसारा ॥ टेक ॥ घड़ा जैसे नीर का फूटा, पत्र जैसे डारका टूटा, यही नर जानजिंदगानी, अबोकरुचेतअभिमानी ॥ १ ॥ भूलोमति

देखि तनु मोरा,जगतमें जीवना थोरा, सदा मति जानु यह देहा, लगाव मन रामसे नेहा ॥ २ ॥ सजन परिवार सुत दारा, सबै उस रोज हैं न्यारा, निकल जब प्राण जावेगा कोइ नहिं काम आवेगा ॥ ३ ॥ तजो मद लोभ चतुराई, रहोनिः-शंक जग माहीं, कटै भ्रमजालका घेरा, कहै गंगादास जनतेरा ॥ ४ ॥ ६ ॥

लालन वचन सँभारिके बोलन ॥ टेक ॥यमुनाके तीरे कान्ह वंसी बजावैं मानो लाल लियो मोहिं मोलन ॥ १ ॥ पाँच टकाकी कामरि ओढ़े बात बोलैं बड़े बड़े बोलन ॥ २ ॥ लेहों चुकाइ कसर सब दिनकी जब तुम अइहो हमारे टोलन ॥ ३ ॥ श्रीरघुराज गुजरी मदमाती बाहर भीतर करत कलोलन ॥ ४ ॥ ७ ॥

आली सियावर कैसा सलोना ॥ टेक ॥ साँवलि सूरति मोहनि मूरति लखै कोई नहीं बाल दिठोना ॥ १ ॥ जनक नगरमें शोर मचो है छुटे खान पान औ सोना ॥ २ ॥ कोटि मदनमूरत न्यौछावर कोई सखी करदे नहिं टोना ॥ ३ ॥ श्रीरघुराज मुकुटवालेपर आखिर हमको फकीरी होना ॥ ४ ॥ ८ ॥

पहुँचादे हमको कोई उनतक ॥ सब निकसि जात मेरे जियकी कसक ॥ टेक ॥ छाई कारीघटा चढ़ि देखो अटा जियमें मेरे होत है धक धक ॥ पग डगमगात तन थरथरात बिजली रहि जावै चमक चमक ॥ १ ॥ तेरी कुँवर कन्हाई

चतुराई सुनि आई जानि परी मोहिं तनक तनक ॥ २ ॥ मथुरा वृन्दावन याद आवै इन कानन सुनि वंसीकी भनक ॥ ॥ ३ ॥ हमतो गरजी हैं दरश परशके हमका न प्यारे अटक भटक ॥ ४ ॥ तजि लोक लाज मकसूद पिया अब खोल पटक ॥ ५ ॥ ९ ॥

मलार।

रसके दिनन सखी कसकै करेजवा मसकैहै चोलिया हमाररे॥रसके दिनन०॥रैन अँधेरिया छाई वदरिया अँगना मैं परत फौहार रे॥शोर चकोर करत चहुँ ओरा मोरवा करत गोहार रे ॥ १ ॥ बाढो प्रेमरूप रससागर सूझत वार न पार रे॥ विन पिया को मोहिं पार लगावै नैया फँसी मँझ-धार रे ॥ २ ॥ काहे सखी कर मंजन दै अंजन वसन पहिरि ब्रजनार रे ॥ का लै करौ सखी वारह आभूषण कापर सोलह शृंगार रे॥ ३ ॥ सब सखियां मिलि अपने वलमसों गावत राग मलार रे ॥ पि ा फहरत पर मैं धूनि रमाई बैठी हौं आसन मार रे ॥ ४ ॥ १० ॥

वदरा उमडे वदरिया छाई पापी पपीहा पीपी रटा॥टेक॥ वर्षाऋतु तो आइ गइ सजनी पिया विन जियरा जात फटा ॥ अव का पै शृंगार करूँ तु बता मो पै नेक न वैरन भई घटा ॥ १ ॥ अंग विभूति ढूँढने निकसी शीश वढाय लई है जटा॥२॥ रसिया कारण भई वैरागन यौवन दिन दिन

जात घटा ॥ ३ ॥ बदरा उमडे बदरिया छाई पापी पपीहा पीपी रटा ॥ ४ ॥ ११ ॥

रचो श्रीवृन्दावन रहस गोविन्द ॥ चलो सखी देखन चलिये नवल अनन्द ॥ यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगंध ॥ खँजरीसरंगी वाजै तबला मृदंग ॥ बीन तौ उपंग मुरली मौहारि मुरचंग ॥ भालमें तिलक सोहै मृगमदरेख॥ मुरली मनोहर जीको नटवरवेष ॥ यह छबि देखैं ठाढ़ी नारी नरेश ॥ ब्रह्मा अरु रुद्र आये गौरी गणेश । वृन्दावन बीच रच्यो रास विलास॥यह गुण गावैं श्याम माधुरीदास ॥१२॥

भजन ।

श्रीभागवत सुना जिन कानन ॥ जाकी महिमा सराहै सुर नर मुनि नारद शारद शिव चतुरानन ॥ टेक ॥ जिनके राम नाम प्रियलागै सीताराम वसी उर आनन ॥ ते यहि लोक परमसुख पावैं अंतकाल चढ़ि जात विमानन ॥ धुंधुकारी एक प्रेत महाखल तरेउ न पिंड गयाके दानन ॥ सप्त दिवस तिन सुना परायण सुरपुर चलेउ वजाय निशानन॥श्रीहरि कथा सुगम सुखदायक प्रिय नाहिं लागै अधमके कानन ॥ तुलसिदास पाछे पछतइहैं जब अइहैं यमदूत भयावन ॥ १३ ॥

राम नामकी टेक परी सुधि श्यामसों लागि रही गुइयां ॥ टेक ॥राजा दशरथके राम जन्म भये अरु रावण मारे छिनमइयाँ ॥ जाय वसुदेव गृह जन्म लिये नँदगाँवमें जाय

के दुहै गइयाँ ॥ बिनु फर बाण ताडुकै मारे अहल्या तारे परवतमहियाँ॥ ब्रज ऊपर इन्द्र कोप कियो गोवर्द्धन धारो नखमहियाँ ॥ ऋषि संग जनकपुर आप गये तहँ धनुष उठाये छिनमहियाँ ॥ गणिक गिद्ध अजामिल तारे शबरी फल खाये वनमहियाँ तुलसी सूरश्याम चरणनके अधम को तारे क्षणमहियाँ ॥ १४ ॥

राम भजो सब काम तजो फिर ऐसा जन्म न पाओगे। ॥टेक॥ ये सब हैं स्वारथकर संगी बिगड़े काम न आवें गे ॥ १ ॥ बड़ीभाग्य मानुषतनु पायो वृथा जन्म गँवाओगे ॥ २ ॥ एक दिना श्रीकृष्णचंद्र बिन शिर धुनि धुनि पछ-ताओगे ॥३ ॥ सूरश्याम प्रभु आश चरणके अंतसमय दुख पाओगे ॥ ४ ॥ १५ ॥

कस मन मूढ राम बिसराये ॥ टेक ॥ गर्भवासमें भजन कबूले बाहर आय अजान कहाये॥ बिनु हरि भजन दशो दिश भ्रमते सपनेमें विश्राम न पाये ॥ चारि पहर मायाकी वशमें काम बली तोहिं नाच नचाये ॥ परमारथ कबहूँ नहिं कीन्हों क्षुधा निवारक जीव बधि खाये॥सुत परिवार बहुत प्रिय लागैं इनहि हेतु बहु द्रव्य कमाये ॥ अंतकाल यमदूत भयावन समुझावन कोई काम न आये ॥ आठ पहर हम हम करि बीते शीत वात पितकफ घेरि आये ॥ सुत वनिता धन देखिकै भूले यम देखत कस मन बिछुकाये॥तीरथ कियो न सेयो संतपद रघुपतिगुणानु

बाद नहिं गाये ॥ तुलसिदास भगवान भजन बिन जन्म अनेक प्रेत होइ धाये ॥ १६ ॥

मोहिंसम कौन कुटिल खल कामी ॥ तुमसे काह छपी करुणामय सब उर अंतरयामी ॥ टेक ॥ भरि २ उदर विषय को धावत जैसे सूकर ग्रामी ॥ जो तनु दयो ताहि बिसरावत ऐसो निमकहरामी ॥ जहँ सतसंग कथा तहँ आलस विषयन संग विश्रामी ॥ श्रीपद छोड़ि सेव अवरनकी निशिदिन करत गुलामी ॥ पापी पतित अधम परनिंदक सब पतितनमें नामी ॥ तुलसिदास यह धनि चरणनके भजिले श्रीपति स्वामी ॥ १७ ॥

राखोपति गिरिवर गिरिधारी ॥ टेक ॥ अब तो नाथ रहे पति नाहीं उघरत माथ यदुनाथ पुकारी ॥ विनय करौं मैं राधावरसों शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी ॥ बल विहीन पांडवसुत डोलैं करते भीम गदा महि डारी ॥ रही न पैज प्रणत पारथकी जबसे धरणि धरमसुतहारी ॥ भूप समाज वीर सब बैठे भीषम द्रोण कर्ण व्रतधारी ॥ कहिन सकत कोउ बात परस्पर इन पतितन मोरि अपति विचारी ॥ लाज गँवाय दास दासनको पाछे आय का करो गिरिधारी ॥ सूरश्याम प्रभु अधम उधारन फिर पछितैहौ देखि उघारी ॥ १८ ॥

कब ढरिहौ रघुनाथ हमारे ॥ टेक ॥ जैसे ढरे प्रभु द्रुपद सुतापर खैंचत चीर दुशासनहारे ॥ जैसे ढरे प्रह्लाद भक्त

पर खंभ फारि हिरणाकुश मारे ॥ जैसे ढरे सुग्रीव भक्तपर अवगुणजानि वाली शर मारे ॥ जैसे ढरे विभीषणके ऊपर सेतु बाँधि लंकापति मारे ॥ तुलसिदास प्रभु आश चरणके मोहिंसम पतित अनेकन तारे ॥ १९ ॥

लाज मोरी राखो गिरिधारी ॥ टेक ॥ गलियाँ गलियाँ फिरत सुदामा क्षुधापीरमें भारी ॥ मरजीभई रघुनन्दनजी-की उठिगइ कनकअटारी ॥ मध्यसभामें बैठी द्रौपदी त्राहि त्राहि पुकारी ॥ खैंचत खैंचत भुजबल थाके बाढ़े पिताम्बर भारी ॥ भारतमें भरिहीके अंडा पक्षी जाय पुकारी ॥ तापर डारि दियो गजघंटा काट्यो संकट भारी ॥ नहिं विद्या नहिं बाहू बल है नाहिं भजन अधिकारी ॥ रामगुलाम रामकर चाकर निशिदिन आश तिहारी ॥ २० ॥

रघुनन्दनसे विनती इतनी दुखद्वंद्व हमारो निवारो ॥ टेक ॥ अपने पदपंकज पींजरमें एक हंस हमारो बैठारो ॥ एक मोहन श्याम जो आइ गये भवसागर पार उतारो ॥ जिन राम भजनमें भंग करै तिनको यमफंदमें डारो ॥ तुलसीजो करै हरिसे विनती परलोक हमारो सुधारो ॥ २१ ॥

जिनके हियमें सियराम वसैं उन औरके नाम लिया न लिया ॥ जिनके घट गंगप्रवाह बहै तिन कूपको नीर पिया न पिया ॥ जिन सत परमारथ जानि लिया उन हाथसों दान दिया न दिया ॥ तुलसी जो करैं हरिसे विनती एक मूरख मित्र किया न किया ॥ २२ ॥

कवकी खड़ी यमुनाके घाट मोरीपार लगादे नाव-रिया ॥ टेक ॥ गुणी गुणी सव पार उतारि गये मैं निर्गुण भइ वावरिया ॥ वहै पुरवैया पवन झकोरै वही जात मोरी नावरिया ॥ जो हों महादेव पार लगैहो तुमके चढाइव काँवरिया ॥ सूरदास वलि आश चरणके मन हरि लेगये साँवलिया ॥ २३ ॥

हे गोविन्द राखु शरण अवतो जीवनहारे ॥ टेक ॥ नीर पियन हेतु गये सिंधुके किनारे ॥ लपटि झपटि ग्राहगहे लेइ गये मझधारे ॥ चार पहर युद्ध कीन्हों गजको पछारे ॥ नाक कान डुवन लागे नाथके पुकारे ॥ नाथकान शब्दगइ गरुडपीठि धाये ॥ ग्राहको तो वधनकर गजराज-कूँ उवारे ॥ सूरके तो यही आश शरणके तिहारे ॥ गोकुलमें जन्म लीन्हों नन्दके दुलारे ॥ २४ ॥

असमय मीत काको कवन ॥ टेक ॥ कमलको रवि परमहित है कहत श्रुति अस वयन ॥ घटत वारि विचारि दुरदिन करत कमलहि दहन ॥ रहत मधुमें लीन मधुकर प्रेमदे चित चयन ॥ निरस जानि विचारि इत उत करत तुरतहि गवन ॥ कीन व्याधै घाव मृगपर जात कानन भवन ॥ अंग शोणित भयो वैरी खोजि दीन्हों तवन ॥ समय असमय जानिले मन खोलि देखो नयन ॥ सूर कहत सहाय सवके रटहु राधारमन ॥ २५ ॥

रामसे करु प्रीति॥श्रवण गोविंद गुण सुनाकर गाव रस-

ना गीत ॥ आजुतौ तोहिं काल अइहै समुझि देखहु चीत ॥ व्यालरूपी काल डोलत मुख पसारे मीत ॥ साधुसंगति बैठते मन होत परमपुनीत ॥ कहत नानक राम भजरे जात अवसर बीत ॥ २६ ॥

मोरंग देशवा कैसनवा ॥ यहि पार मोरंग वहिपार तिरहुत विचवाँ परीहै बालूरेतिया ॥ वह बालू रेतियामें सैयाँ लेकै सुतल्युँ नगवा डसेहो बाला जियरा ॥ नगवाके डसेसे हम नाहीं मरबै मुअल्युं मैं सैयाँ तोहरे वियोगवा ॥ कह कबीर सुनो भाई साधो कर्म लिखनियाँ काहै योगवा ॥ २७ ॥

सुन्दरबोनी है शरीर तनिक नाहीं विगरी ये माधो ॥ कौन सखस ऐसो आया कौनीकै लेकै निकलाये माधो ॥ ॥ टेक ॥ आठ काठकै बनाहै पिंजरा नव दरवाजा ये माधो॥ निकलि गये पक्षी प्राण चुगन लागे कागा ये माधो ॥ लाय दियो मुख आगि काठ बहु भारा ये माधो ॥ सुतलि है कर बांस शीश गहि मारा ये माधो ॥ जो वैरीकरमूल ताहि हित जाना ये माधो ॥ पलटूदास गुरुज्ञान जगतमें समुझिअलगाने ये माधो ॥ २८ ॥

करो मन वा दिनकी ततवीर ॥ टेक ॥ नदिया एक वहै भवसागर मन नाहिं धारत धीर ॥ नाव न घेरा लोग घनेरा खेवनवाला बखील ॥ आये यमदूत पलँग चढ़ि बैठे होने लगी तकसीर ॥ मुद्गर माारिकै प्राण निकालत नैनोंसे वहि

चले नीर ॥ बांधिखंभलै देत ताड़ना विकल होतशरीर ॥ कहै कबीर सुनो भई साधो अब न करब तकसीर ॥ २९ ॥

तुम्हैं बिन नाथ कुंजनबन भटकी ॥ मैं यमुना जल भरन जातही शिर गागर मेरी गिरिधर पटकी ॥ मैं दधिबेचन जात बृंदाबन धै बहियाँ मेरी गिरिधर झटकी ॥ बहादिनकीसुधि भूलगई मोहन जादिन मालासुँ बेसर अटकी॥ चन्द्रसखी छबि देखि मगन भइ साँवलिसूरति पर मेरोजिय अटकी ३०

जय नारायण ब्रह्मपरायण श्रीपति कमलाकंतं ॥ शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक सुर मुनि ध्यान धरंतं ॥ टेक ॥ नाम अनंत कहाँ लगि बरणों शेष न पाव न अंतं ॥ मच्छ कच्छ सूकर नरहरि प्रभु बामन रूप धरंतं ॥ परशुराम एक रामचन्द्र छबि लीला कोटि करंतं ॥ बलिभद्र होइ दैत्य सँहारे कंस केश गहंतं ॥ पैठि पताल कालीनाग नाथे फणपर नृत्य करंतं ॥ तीन लोकके पूजा खायो सुरपर जाय छपंतं ॥ जगन्नाथ जगमग चिन्तामणि बैठिरह्यो नीचिंतं ॥ कलियुगमें ये कलंकी होइ हैं नाम परी गुणवंतं ॥ दशमस्कंध भागवतगीता सूरशरण भगवंतं ॥ ३१ ॥

रोकत श्याम मैं कैसे जाउँ पनियाँ ॥ टेक ॥ शीश मुकुट कंचनको झलकत ॥ मकर मनोहर कुंडल हलकत ॥ चन्दन खौरि माथमें राजित ॥ उर बैजंतीमाल विराजित ॥ पीतांबर कटि काछे कछनियाँ ॥ कटिकिंकिणियाँ नूपुरधारी ॥ झुन झुनात पर मुनिमनहारी ॥ पगु पैंजनियाँ डोलत बाजैं॥ देखि

कै दरश दूरसे भाजै ॥ अति चंचल अलबेली चितवनियाँ॥ अधर सुधारस वेणुबजावे ग्वालबाल संगहि लेइधावै॥कहा न मानो नन्दमहरको ॥ माखन खात फिरत घर घरको ॥ बरजो मोहनको नन्दरनियाँ ॥ गागरफोर मोर मन हरकै ॥ उरमें भुजमें करमें कसके अयोध्यापति हरिनागरनटके ॥ भागि चले कुंजन वन सटके ॥ ऐसी निठुर हठि परी कुव नियाँ॥ब्रह्मादिकसुर ध्यान लगावैं ॥ शेष सहस जेहि पार न पावैं ॥ वृंदावनमें रासरचे हैं मोहन केलि करत सखियनसे गावत सूरदास हरिदनियाँ ॥ ३२ ॥

मेरे मन इतनी शूल रही ॥ वै बतियाँ छतियाँ लिखि राखी जे नन्दलाल कही ॥ एक दिवस मेरे घर आये मैं दधि मथत रही ॥ रतिमाँगत मैं मानकियो सखि सो हरि गुसा गही॥शोचति अति पछितापति राधिका मूर्छित धरणि ढही ॥ सूरदास प्रभुके विछुरेते वृथा न जात सही ॥ ३३ ॥

कहै कोइ परदेशीकी बात॥वे द्रुमलता वही बन कुंजन वे तरुवर वै पात॥ टेक॥जबसे विछुरो नन्द साँवरो नाहिं कोई आवत जात ॥ मंदिर अर्ध अवधि हरि बदि गये हरिअहार टरिजात॥अजया भख अनुसारन नाहीं कैसेके दिवस छिरात शशिरिपु बरष भानु रिपु युगसम हररिपु कीन्हें घात ॥ नक्षत्र बेद ग्रह जोरि कर्ध करि सोई बनत अब खात ॥ मघपंचक लेगये साँवरो ताते जिय अकुलात ॥ सूरश्याम बिन विकल विरहिनी करमींजत पछतात ॥ ३४ ॥

श्यामका सँदेशा उद्धव पाती लिखि आई रे ॥ टेक गो-

कुला उजारि कीन्हों मथुरा वसाई कुवरीसे रानी कीन्हों हमैं बिसराईरे ॥ पातीतो अनेक आई बाँचि नहीं जाईरे ॥ घूँघटके ओट पाती छातीसे लगाईरे ॥ शूरश्यामप्रभु आश चरणके निशिदिन ध्यान रहत लवलाईरे ॥ ३५ ॥

हमरी गली वरवश श्याम आवेरी ॥ टेक ॥ मैं यमुना जल भरन जात री वरवश श्याम मोरी गेंडूरी वहाई रे ॥ मैं दधि वेचन जात वृंदावन परवश श्याम मोसे झगरा मचाईरे ॥ सूरश्याम वरजो नाहिं मानत भरली गगरिया मोरी श्याम ढ़रकाई रे ॥ ३६ ॥

निर्दयी श्यामने फोरी दई पनघटपर मेरी गागरिया ॥ जव नीर भरन घरसे निकसी एक काग वोलि गयो मागरिया ॥ दाहिने दहिजार विलार गयो वाँयेकर छींकत छागरिया ॥ मोरे संगकी सखी सव दूर निकस गई जो सव गुण पूरी आगरिया॥मोहिं जानि अकेली छेंकि लियो शिरवाँधे टेढ़ी पागरिया ॥ मोरी अरजगरज एकौ नाहिं मानत वसत कौनधौं नागरिया ॥ मन उठत क्रोध तनु थरथरात पगपरत सूध नाहिं डागरिया ॥ सूरश्याम सुंदर मनमोहन ओढ़े काली कामरिया ॥ ३७ ॥

राधेने वँसिया चोराई कि अव नाहीं जिअवे रे माई ॥ खेलत रहो कदमकी छहियाँ सव सखियन विलम्हाई॥वाँह पकरि मोरि मुरली छीन ली कान्ह रोवत घर जाई॥ले कनियाँ समुझावै यशोमति वारवार उर लेत वलाई ॥ वासकी

वंशी जान दे मोहन सोनेकी देउँ गढाई॥ सुरपुरते वंशी यह आई बाबानन्द मँगाई॥ सो वंशी मोर प्राण वसत हैं अब कैसे जात बनाई॥ इतनी सुनिकै ग्वालि छकित भई कृष्णको कंठ लगाई॥ सूरश्याम वलिजात यशोमति कान्हको अन्त न पाई॥ ३८॥

हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो॥समदरशी है नाम तिहारो सोई पार करो॥ एक नदिया एक नार कहावै मैलो नीर भरो॥ जब मिलिगो तब एक बरण भो गंगानाम परो॥ इक लोहा पूजामें राखत यकघर वधिक परो॥ सो दुविधा पारस नहिं राखत कंचन करत खरो॥ इक माया इक ब्रह्म कहावत सूरश्याम झगरो॥ कै याको निरवाह करो प्रभु नाहिं प्रण जात टरो॥ ३९॥

इनमें कौन राधिका रानी॥टेक॥ हँसि रुक्मिणि पूछत सखियनसे गूढ़ वचन मृदुवानी॥ नीलाम्बर जाके तनु सोहे मुखपर लट लपिटानी॥ सो कहियत वृषभानुनन्दिनी मधुर मंद मुसक्यानी॥ रसके वश कीन्हें मनमोहन सुनियत चतुर सयानी॥ दर्शन विन तरसैं दोउ नैना ज्यों मछरी विन पानी॥॥ शिव ब्रह्मा जाको ध्यान धरत हैं सो राधा महरानी॥ सूरदास संतनके कारज गिरिधर हाथ बिकानी॥ ४०॥

मधुवन तुम कैसे रहत हरे॥ टेक॥ तुम्हरे तरे हरि

वंशी वजावें शाखाटेकि खरे॥अधम निलज्ज लाज नाहिं तुम-को फूलत फेरि फरे ॥ हमरी आश तनिक छाहनके जव तव होत खरे ॥ तुम न मरी वृषभानुनंदिनी भेटत अंक भरे ॥ जैसे जल बिन मीन दुखित है जलहुके मीन मरे ॥ कुंजन कुंजन फिरति राधिका नैनन नीर भरे ॥ जो आवै सोइ मंगल गावै सुनि सुनि हाल जरे ॥ सूरश्याम प्रभु तुम्हरे दरशको व्रजवासी विसरे ॥ ४१ ॥

सवनमें राजत एक जनी ॥ टेक ॥विहरत सकल फिरत वृन्दावन सखिन मध्य रमनी ॥ तो याको सुत ता सुतकोसुत ता भख सुत वदनी ॥ तिमि रिपु सुत भ्राता पितुवाहन ता अरि कटि जु बनी ॥ शैलसुतापति ताके भूषण ता वाहन नैनी ॥ दाडिमदशन अधर विम्वाफल मृदु कोकिल वैनी ॥ मीनसुतासुत तासुत नासा तापर जलजमनी ॥ लटकन वेसरिकी द्युति राजत झलकत कोटि कनी ॥ वेणी छूटिपरी अँग ऊपर उपमा सव पैनी ॥ कंचनखंभसी मानो गोरी नाचत चढ़त फनी ॥ सूरदास यह देखि महाछवि वाढ़त प्रीतिघनी ॥ ४२ ॥

आजु हम देखा गिरिधारी ॥ माथे मुकुट गले वैजन्ती चितवनि अतिप्यारी ॥ टेक ॥ अलवेली पाग शिर सोहै गले वनमाला जग मोहै ॥ पीताम्वरकी कछनी काछे ॥ वाँये करमें लिये मुरलिया गौवनके पाछे ॥ यमुना जल भरने मैं जाती कोई मोर संगी नहीं साथी चकृतचित्तनाथको चीन्हा॥

श्यामसरोज विलोकिसखी मोहिं तनमनसवहरलीन्हा॥ ललिताकर सुनिये यहि बातें राधिका दरशन लागे सख सव प्रभुका पहँचाने ॥ सूरश्याम यह शोभा निरखिकै हिरदयमें हरषाने ॥ ४३ ॥

चलो सखी भरि नयन देखिये प्यारे छवि रघुनन्दनकी॥ श्यामसुंदरकी सुरति निरखि सखि रही न सुधि कछु तन मनकी ॥ टेक ॥ अलबेली शिरपाग सुरंगी कलँगी लगी हीरा मोतिनकी ॥ भाल तिलक केसरके रचना कुंडलझलकै काननकी ॥ बाँकी भौंह नयन रतनारे नासा विच मोती झलकी ॥ अधर कपोल चमक दशननकी सखी मेरो जियरा वशकी ॥ रत्नसिंहासन द्वौ सजि बैठे जनकललो दशरथ वारे॥कामकोटि छवि शोभा निरखि प्रभु तुलसिदास तन मन वारे ॥ ४४ ॥

कैसा वना वीर बाँका रे सजनी ॥टेक॥ माथे मणिमुकुट जराऊ हीरा लाल लागे कैसा वीर मजाका रे सजनी ॥ शोभित राम ललाम जनकपुर देखो छवि लषण लालाकी रे सजनी॥जनकपुरीमें शोर मचो है करत जगत विच साका रे सजनी ॥ मधुर अली घर जाऊँ मैं कैसे परत डगा विच डाका रे सजनी ॥ तुलसिदास प्रभु मन हर लीन्हा कैसी शोभा वनका रे सजनी ॥ ४५ ॥

मुरली धुनि आजु कैसी यशुमतिसुत करिगये ॥ ॥ टेक ॥ मुरली अधरपर धैके गावत सुरतान ॥ चितचोर

सुत यशुमति कर जिन करत विहाल ॥ धाओ सखिया धरो यशुमतिसुत पहराओ जयमाल ॥ सूरश्याम जब प्रभु-जीको पाये आनँद उर न समात ॥ ४६ ॥

विना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारी है ॥ टेक ॥ सुनो तुम मातुकी करणी सकल दुनियाँसे न्यारी है ॥ राम को विमुख तै कीन्हों वही जननी हमारी है ॥ धराणि ऊपर भरत लोटैं नयनाँसे नीर जारी है ॥ रोवैं शिर धुनि धुनि हाय हाय करि कठिन करता विगारी है ॥ वसिष्टमुनि वेद पढ़ावैं करो तुम राज भारी है ॥ अवधसे निकसे रघुनाथ मनो वरछीसे मारी है ॥ चलो रघुनाथके शरणन यही तुलसी विचारी है ॥ ४७ ॥

अथ बारहमासा ।

ऊधो भोरवै मधुपुर जाहु कन्हैयाको लै आवहु ॥ टेक शीतल चन्दन अंग लगावै कामिनी करै शृंगार ॥ इहाँ महिनवाँ बीतत ऊधो सुखकर मास अषाढ़ ॥ एकतो ऊधो बारि वैसवा दुसरे पिया परदेश ॥ तिसरे मेह झड़ा झड़ि लाये सावन अधिक अँदेश ॥ भादौं निशि अँधिअरिया ऊधो गरजै औ घहराय ॥ विजुली तड़पै हियरा लरजै के करि शरनियाँ उठि जाय ॥ क्वाँर कुशल नहिं पावे ऊधो कैसे कहूँ सनेह ॥ मैं विरहिनि विरहाकी माती पिया कबसे छाये परदेश ॥ कातिक पूरणमासी ऊधो

सब सखि गङ्ग नहायँ ॥ हम अस अवला परमसुन्दरीके करे गोहनवाँ लागति जायँ॥ अगहन मोर कुहूँके ऊधो वालम कठिन कठोर ॥ अवकी वार पियउ नाहिं ऐहैं जियत न पैहैं जियरा मोर ॥ पुसवै फुहवाँ परिगो ऊधो भीजैं अंगके चीर ॥ यमुना किनारे कान्हा वँसिया वजावें नैनन बहि जल नीर ॥ माघमास ऋतु दारुण ऊधो कोलै मारै तुषार ॥ केत नो रुइआ भरैबो ऊधो विनपिया जाड़ न जाय ॥ फागुन फगुवा खेलत्यूँ ऊधो रखत्यूँ हियरा लगाय ॥ हमरे बलमुआ जो घर होते रखत्यूँ मैं रँगमों रँगाय ॥ चैतमास वन टेसू फूले चम्पा लालगुलाल ॥ पशु पक्षी सव केलि करत हैं दुःख सहो ना जाय ॥ वैशाखमें वँसवा कटवौत्यूँ ऊधो रचि रचि मन्दिर छवाय॥ चौमुख दियना जरौत्यूँ ऊधो अँचरन करत्यूँ वयार ॥ जेठमास वरसाइति ऊधो वट पूजै सवकोय ॥ सूरदास वलि जाय चरणकी उहवाँ मिलैं हरि मोर ॥ १ ॥

श्यामसुन्दर व्रजराय न आये वर्षाऋतु वीतिगई ॥ जेठ तपत दिनरैन अषाढ़में गरजिघुमारि वरसै ॥ सावन गड़े हिंडोल कृष्ण कुवरी सँग झूलि रहे ॥ श्यामसुन्दर व्रजराज न आये० ॥ भादौं वरसत मेघ क्वाँर वन मोरवा कुहुँकि रहे ॥ श्यामसुन्दर व्रजराज न आये० ॥ अगहन अगम अँदेश पूषमें वरत रह्यूँ हरिके ॥ माघै मकर नहाय कृष्णकी पाती नाहिं पाई ॥ श्यामसुन्दर व्रजराज न आये० ॥ फागुन उड़त गुलाल चैत वन टेसू फूलिरहे ॥ सूरश्याम

कृष्ण वैशाखे वहियाँ आय गही ॥ श्यामसुन्दर ब्रजराज न आये वर्षाऋतु वीतिगई ॥ २ ॥

वृन्दावन विरहिनी तरसै महाराज द्वारका छाये॥साधुन-की ऋतु आई सखिया हिंडोला झूलैं ॥ पहिरे कुसुमरँग सारी विरहा अगिनि तनु जारी १ ॥ भादौं गगन घन गरजै चहुँओरसे दामिनि दमकै ॥ सूनी सेज डरलागै मुर-ली मधुर सुर वाजै ॥ २ ॥ क्वाँरै शरदऋतु आई हमरे हिया विच शूलै ॥ देखा चहौं नन्दलाला यशुदाजीके मद नगोपाला ॥ ३ ॥ कातिक कान्ह ना आये निजकै मधुपुर छाये । उनको न ऐसी चहिये ब्रजछोड़िके अंतरहिये ॥ ४ ॥ अगहन कर वादाकरि गये झूठेका दिलाशा देगये ॥ मन तो हमारा लेगये जियरा वियोगी करिगये ॥ ५ ॥ पूषै लिख हरिपाती सुनिकै दरकि गई छाती ॥ गले रुंडका माला सु-निकै योग जियहालागुनिकै॥ ६॥माघै जोमनकोमारैइन्द्रिय भसम करिडारै ॥ जो इसका ताना तानै सोई योग गति जानै ॥ ७॥ फागुन कर यह फल पावा जो किया सो आगे आवा ॥ कुवरी सवति वेलम्हावा हमको लिखा वेदावा ॥ ॥ ८ ॥ चैतैं चारि चमेली चम्पा फूले वनवेली ॥ विना मीनके पल्लव वाढे अजहूँ न आयो हरि गाढ़े ॥ ९ ॥ वैशाखै विर-हिनि वावरी आवै पिया विनतावरी ॥ सुधि श्यामसुंदरकी आई सेजियाँ नींद न आई ॥ १० ॥ जेठै जरौं जवानी जेके लगै सो जानी ॥ रोवैं राधिकारानी यशुदाकेसुतहमजानी ॥

॥ ११ ॥ आषाढै आशा तजिके निःकेवल हरिपद भजिके ॥ एकदम हरीहर मेरे गावैं सूरदास पद टेरे ॥ वृन्दावन विरहिनी तरसैं महाराज द्वारका छाये ॥ १२ ॥ ३ ॥

चेत दे सुनिये मोरे महाराज पृथिवीकाहूकी न भई॥टेक॥ अपने सुतके मूँड मुड़ावैं छुडा लगहि न पावैं॥ आनके सुतके मूँड़ कटावैं तनिक दरद नहिं आवैं ॥ १ ॥ लेके तेगा चला सिपाही अजयाके शिरकाटा ॥ मूँडकाटि भुइया धरि दीना मूँड़ कुकुरलै चाटा॥ २ ॥ अपनीभवानीके भेडा चढ़ावैं पीरनके नवनेजा ॥ जिन तो जन्मदिया उनको कुछ नहिं दीन्हा जिन्ह वहियाँ पकड़िके भेजा ॥३॥ रहेनि एकसे भयन सहस्रसे विश्वासात महतारी ॥ कहैं कवीर ये कैसे तरिहैं सहस पुरुषकी नारी ॥ ४ ॥ ४ ॥

गुरु मैं तो भूली मुझे डगर बतायेजा ॥टेक॥ हाट वाट में एक झउवा देखेउँ पक्षी एक कउवा ॥ मानुषमें एक नउवा देख्यों नउवा कौवा झउवा छनमें मिलादेउ ॥ १ ॥ ब्राह्मणके घर राँडी देख्यों कोहराके घर हाँडी ॥ जोलहाके घर माँडी देख्यों माँडी औहाँडी राँडीछनमें मिलादेउ ॥ २ ॥ राजाके घर हाथी देख्यों लोहराके घर भाथी॥कोहराके घर थापी देख्यों थापी हाथी भाथी छनमें मिलादेउ ॥ ३ ॥ डोमवाके घर एक दउरी देख्यों कहराके घर एक सउरी ॥ भुजवाके घर बहुरी देख्यों दउरी सउरी बहुरी छनमें मिलादेउ ॥ ॥ ४ ॥ वनमें एक बेला देख्यों तेलीके घर तेला ॥ कवीरदास

के घर एक चेला देख्यों बेला तेला चेला छनम मिला-
देउ ॥ गुरु मैं तो भूली मुझे डगर बताएजा ॥ ५ ॥ ५ ॥

तीरथराज प्रयाग निकाई वदत व्यास मुनिवर अहिराई ॥
॥ टेक ॥ रवितनया सादर सुरसरिता संग वहत अतिशय छ-
विछाई ॥ श्याम अरुण उज्वल वराबरी ब्रह्मसमान महासु-
खदाई ॥ १ ॥ मकर मास अथवा कोई दिनमें मध्य त्रिवेणी
जो जाय नहाई ॥ तीनों मिलिके करत तेहि पावन क-
लुष सकल वाके देत वहाई ॥ २ ॥ वेणीमाधो रमत दया-
युत ब्रह्मा यज्ञकरी मनलाई ॥ अक्षयवट तरशूल टंकेश्वर आ
सीन अशरण सहाई ॥ ३ ॥ वेद पुराणसिद्धसुरनरमुनितीनों
से अधिक न ठहरा कोई ॥ सो त्रिदेव तहँ वसत निरन्तर को
कहिसके वाकी सुयश वड़ाई ॥ ४ ॥ संतसमाज नानातप-
सी मुनि कल्पवास करही तहँ जाई ॥ हरिप्रसाद सोइ धन्य
जीव जग जो ध्यावहि जगजाल उठाई ॥ ५ ॥ ६ ॥

चित्रकूटवन परम सुहावन रामसियालछमनमनभावन॥
॥ टेक ॥ जहां भरत रिपुहन मिथिलेश्वर युतसमाज प्रभु-
आये मनावन ॥ आयसु मानि कूपजल राखी वहुरे चरण
पीठिलें पावन ॥ १ ॥ कामतागिरि लछिमनगिरि सुंदर विरि
जा ब्रह्मकुण्ड शुभठावन ॥ मन्दाकिनी गायत्री पयास्विनि
राधारामघाट अघदावन ॥ २ ॥ तीरथ कोटि देव अंगना-
भलि हनुमत धार सुसरित लजावन ॥ अनुसुइया तप भूमि

विराजे गुप्त गोदावरी पापदहावन ॥ ३ ॥ एकसे एक सरस मंदिर बनि मुनिनायककी मन अरु झावन ॥ ४ ॥ हरिप्रसाद को सब मिल दीजे सुखसमाज युत मुनिजन आवन ॥ ५ ॥ चित्रकूटवन परम सुहावन राम सिया लछमन मन-भावन ॥६ ॥ ७ ॥

जब जावेउ कचहरीमें जानि परी॥ टेक ॥ जा दिनसे तुम आयउ बंदे आँतीसे पोटी नरक भरी ॥ संकटमें तुम फिर फिर टेरेउ हे भगवन्त शरण तुम्हरी ॥ १ ॥ कुछ दिन गोद हिंडोला झूलेउ लड़िकनके सँग केलिकरी ॥ युवतिनके सँग वदन विलोकेउ मानो मनोहर वेइलि फुली ॥ २ ॥ रंग महलसे तुरत निकाले सनम पिल पालकी चढ़ी ॥ चोप-दार दो आगे पीछे तिरन काठपर दिहिया धरी ॥ ३ ॥ नरक घोरमें त्रास देखावत हिर्देमें बाकी निकली ॥ ये सब यमके द्वारे खड़े हैं वहां हाजिरी जामिनी कोइ न करी ॥४॥ पंथ कठोर घसीटत पीटत मुद मुदगर गले फाँसी परी ॥ सकल अनेती किहे ए जन्म भरि कहै कबीर सुनो हो संतो अबका झंखो वाट परी ॥ ५ ॥ ८ ॥

करमगति टारेहु नाहीं टरे ॥ कहाँ वसै राहु कहाँसैं रवि शशि आनि संयोग परे ॥ गुरु वसिष्ठ पंडित अति ज्ञानी रचि पचि लग्न धरे ॥ पितामरण अरु हरण सियाको वनमें विपति परे ॥ भारतमें भरुहीको अण्डा घण्टा टूटिपरे ॥ हरिश्चन्द्रसे दानी राजा नीचको पानी भरे ॥ तीन

लोक भावीके वशमें सुर नर देह धरे ॥ सूरदास होनी सो
ह्वैहै काहेको शोच करे ॥ ९ ॥

श्रीगंगा जगतारको आई ॥ नृपभगीरथने तप कीन्हों
शिव ले शीश चढ़ाई ॥ पापी दुष्ट अजामिल गणिका पतित
परमगति पाई॥ परमपुनीत प्रीति ब्रह्मादिक वेदव्यास मिलि
गाई ॥ नामलेत तवध्यान धरतहै तारत वार न लाई ॥
विप्र गदाधर भरद्वाजकुल केवल गंग सहाई ॥ १० ॥

श्रीकृष्णकृपालुकृपानिधिकेशव दीनबन्धु दयाल॥दामो-
दरवनवारीमोहन गोपीनाथगोपाल॥राधारमणविहारीनट-
वर सुन्दरयशुमति वाल॥माखनचोर गिरिधर मनहारी सुख
कारी नँदलाल॥गोचारण गोविन्दगोपपति जीभावन मंजुल
ग्वाल ॥ छीतस्वामिसोईअवप्रगेटकलिमेंवल्लभलाल॥ ११॥

डसो हमैं श्याम भुजंगम कारे॥रोम रोम विष छायगयो
है चितवत श्वासा डारे ॥ वेगि बुलावो गरुड़ गोपालै जो
यहि विषको टारे ॥ यन्त्री करत मन्त्र नहिं लागत करि
उपाय सब हारे ॥ विना व्रजराज पीर को जाने जो यहि विष-
को टारे ॥ कहा कहौं कछु वश नहिं मेरो वैद्य गुणी सब
हारे ॥ विरह व्यथाकी पीर कठिन है सो मोहिं डारत मारे ॥
भली करी ऊधो तुम आये वंद दै चले हमारे ॥ सूरदास
गिरिधर कब ऐहैं प्राण हमारे ॥ १२ ॥

अथ सोहर और मंगलप्रारंभः ।

चैतहिंकै तिथि नवमी तो नौवत वाजै ॥ वाजै दशरथ राजा

द्वार कौसल्यारानीमन्दिर हो ॥ मिलहु न सखिया सहेलरी मिलि जुलि चली ॥ राजाके जन्मे हैं राम करिय निवछाव रि हो ॥ केहुनावै वाजूबन्द केहु कजरावट ॥ केहुरे दखिनवा क चीरकरहिं निवछावरि ॥ भितरासे निकरी कौशल्या अँ गनवहि ठाढी भई हो ॥ रानी धइ धइ हृदय लगावै कर- हिं निवछावारि ॥ रामके मथवाँ चंदनवाँ वहुत नीकला- गै ॥ दिया गुरु वसिष्ठ वहुत नीकलागै ॥ रामकी आँखि- याँ रतनारी कजरवा भलसोहै ॥ दिया है फूआ सुभद्रातो पतरि अँगुरियानि ॥ रामके मथवा लुटुरिया वहुत नीकलागै जैसे फुलेह विच कलिया वहुत छवि लागै ॥ रामके गोडवाँ घुँघुरवा वहुत नीकलागै ॥ नान्हे गोड़ चलत बकैयां देखत राजा दशरथ ॥ जो यह मंगल गावैं गाइ सुनावै हो ॥ तुलसी दास अमरपद पावै हो ॥ १ ॥

जन्मे श्रीकृष्ण मुरारी भक्तहित कारने॥मथुरालियोअव- तार गोकुल झूलैपालने॥तिथि अष्टमी बुधवार भादौंवदिकी करी ॥ रोहिणी नक्षत्र अधिरात जन्मालियो शुभकी घरी॥ धनि देवकी वसुदेव जहाँ प्रभु अवतरे॥धन्य यशोदा बाबा नन्द महर घर पग धरे ॥ धन्य धन्य सुर नर मुनि सब जय जय करैं ॥ दुंदुभी वाजत आकाश सुमन वरषा करैं ॥ ब्रजवासी गोरस भरि भरि करि ल्यावहीं ॥ दधिकाँदो बाबा नन्द सुकीच मचावहीं ॥ वाजत ताल मृदंग वीणा औ बाँसुरी ॥ निरतत गोपीग्वाल चरण चित्त

चावरी॥यशुमतिचीर पहिराइ नौरंग भई ग्वालनी॥ सुन्दर वदन निहारि चकित भई भामिनी॥ श्रीबलभद्रजीके वीर असुर दल खंडना॥भक्तवत्सलमहाराजयादवकुलमंडना। शंकर धरत हैं ध्यान सुगोद खिलावहीं॥ सौमुख चूमति माई सुपलना झुलावहीं॥ श्रीनन्ददास सनेह चरन चितलावहीं॥हरिगुण मंगल गोविन्द गुण गावहीं॥ २॥

यशोदा वरजो तू अपना कन्हैया अँगनवा मोरे जिन आवै॥ धोइ डारो माथेके सेंदुरवा नयन रस काजर॥मीसि डारो दांतेके वतिसिया कन्हैया मोरे न जैहै॥ वाढ़े मोरे माथेके सेंदुरवा नयन रस काजर॥ युग युग वाढ़े मोरे दाँते क वतिसिया कन्हैया राउर निति आवै॥ साँझे आवै सवेरे रानी चला आवै ठीक दुपहरिया कन्हैया राउर नित आवैं॥ जो यह मंगल गावै गाइ सुनावै॥ सूरदास अमर पद पावै॥ ३॥

चन्दन केरी चोकिया तो मोतियन झालरी॥ तेहि चढि राम नहाँइ सीतारानी बिहँसै॥ मचियहि बैठी सीतारानी सब सखी पूँछहि कौन कियो व्रत नेम रामवर पायउँ॥ माघहिमास नहानिउँ अगिनि नहिं तापेउँ विधिसे रहिउँ अतवार रामवर पायउँ॥ कार्तिक मास नहानिउँ रज पैयाँ लागिउँ तुलसीक दियना चढ़ायउँ रामवर पायउँ॥ भूखी रहिउँ एकादशिया दुआदशि पारनभूखे ब्राह्मण खिआयउँ रामवर पायउँ॥ ४॥

ठाढ़ीतिरिया मनझंखै सुनहु सिताला मैया ॥ बिनुरे बासक घर सून मैं तपसिन होवेउँ ॥ चुपरहु तिवई तू चुपरहु जियरा सुचित रहु तिवई सात बालक तोहैं देवेउँ अंगन भरि खेलि हैं ॥ मैया कोरी नदियाँ दहिया जमैहौं तुम्हैं जुडवै हैं ॥ ५ ॥

भीतरासे निसरी है राधे बेरौठवै ठाढ़ि भई ॥ हाँसि हाँसि पूंछहि यशोदा काहे बहु अनमन ॥ काहकहौं मेरी सासु तो लाजकी बातियाँ ॥ सासु हमरी महल बिच चोरी भई तिलरी चोराई गई ॥ पहिरहु अनवट बिछुवा पलधर घूँघर बहु ओढिलेहु झीनापिछौरा वृन्दाहिवन हेरहु ॥ असजिनि जानहु सासुकि तिलरी लाहकी तिलरीम हीरा औ लाल तिलरिया मोहरकै ॥ अस जिन जानहु माई की मुरली बासे हकै ॥ मुरलीमें प्राण अधार मुरलियामें जिय बसै ॥ ६ ॥

छोटै पेड़छिउलिया तो मोतिया करहि गई ॥ तेहि तर ठाढ़ि हरिनियाँ हरिन बाट जोहै ॥ कवधौं अई है हरिना वृन्दहिवन जावै ॥ आजु नन्दघर बरही हरिन मारिजै है ॥ मचिअहिं बैठि यशोदा तो हरिनी अरज कहै ॥ रानी बरु मोहिं मारि अडावहु हरिणाजिनि मारहु ॥ जाहु हरिनि घर आपन हम नहिं मानव ॥ बिहने बाबुल कर बरही हरिनि हम खाउब आगेके घोड़वा राम चले पाछवा लछमन चले अरिपास छेकेनि बहेलिया हरिनी मारिआये ॥ सभवाहिं बैठे राजा दशरथ हरिनी अरज करै ॥ राजा भमूआ सिझ

जेवनार खलरिया मोहिं बकशै ॥ जाउ हरिनि घर अपने हम नहिं मानव ॥ खलरीकै खँजरी मढ़ाउ बाबुलके दुलारव ॥ ७ ॥

अन्न तो तजेउ कौशला रानी पनियाँनघूटै राजा तेहि परत जब परान तो एक संततिविनु ॥ हुँकरहु नगरके विप्र वेगिहि चलि आवहिं बाउरिरानी कौशिला देइ तेहि समुझावहिं ॥ आये हैं विप्र ब्राह्मण डेहरियहि ठाढ भये रानी दशरथ ऐसा पुरुषवा काहेको दोष लावहु ॥ लेहु तु अक्षत सुपरिया वेलेहके पतिया रानी पूजहु महादेवकी पिंडी संतति तोहरे जनमे ॥ होत विहान पह फाटत रामजन्म भये वाजै लागे अनन्द वधैया उठनलागे सोहर ॥ सोनेके खरौआँ राजादशरथ डेहरियहि ठाढभये ॥ रानी कहहु तो पटना लुटाओं राम तोहरे जनमे ॥ माँगहु सुरही गइया डेवढियहि ठाढि करहु लेहु पिताम्वर धोती ब्राह्मणके संकलपहु ॥ सोनेके खरौआँ राजादशरथ हेरहिं अवधपुर मरहीं पियासन नहिं पावैं विप्र ब्राह्मण धोतिया संकलपै ॥ कलियुगमें ब्राह्मण जनमेउ अहो ब्राह्मण जनमेउ घरघर माँगेउ चुटकिया दुआरे फेरिया लायउ ॥ ८ ॥

वार वार हलरावै गोदिया खेलावहिं यशुमति सुख न समाय कन्हैया अस वालक ॥ नन्दमहरके द्वारे थार मंगल भरी गावैं मंगलचार कन्हैया अस वालक घर घर बजत वधाव छाव ध्वज तोरण माणिमय रचत वजार कन्हैया

अस वालक ॥ देहिं लेहिं न्यौछावर आरति करि करि नहिं कुछ वर्ण विचार कन्हैया अस वालक ॥ भूषण वसन लुटावैं हिलि मिलि गावैं अभिमत फलदातार कन्हैया अस वालक ॥ सुर सुरपति पचि जान ज्ञान दुँदुभी ध्वनि वरसै सुमन अपार कन्हैया अस वालक ॥ सकल सराहहिं भाग यशुमतिजीके त्रिभुवन जयजयकार कन्हैया अस वालक ॥ दशादिशि उड़ै अवीर भीर ब्रजवासिन करकंचन लिये थार कन्हैया अस वालक ॥ गावत चलीं बधाई लेइ घर घर मंगल कलशसुधार कन्हैया अस वालक ॥ युवतिन लीन्हीं घेरि नन्द यशोमति जूके लेइ हौं मैं तो गरवाके हार कन्हैया अस वालक ॥ मागध सूतबन्दी गुण गावहिं नन्दमहरके द्वार कन्हैया अस वालक ॥ नन्ददिये वहुदान धेनु धन वाहन भरिमन पवन हजार कन्हैया अस वालक ॥ ब्रजमंडल सुखसिंधु उमँगि दशादिशि चलो को कवि पावै पार कन्हैया अस वालक ॥ कोइ वाहर कोइ भीतर हिलि मिलि नाचै सजि सजि अमित शृंगारकन्हैया अस वालक ॥ यमुनानीर सुहावन पावन तृणतरु सुखद वहै जलधार कन्हैया अस वालक ॥ रामायण ब्रजधनिधनिवौ शुभघरि जहँवाँ हरिको अवतार कन्हैया अस वालक ॥ जो यह मंगलगावै गाइ सुनावै सूरदास गुण गावत चरित अपार कन्हैया अस वालक ॥ ९ ॥

इति भक्त भगवानदास मुराईकृत सोहर समाप्त ।

संगीत ।

धुधुकुट धुधुकुट धृकिटि धृकिटि धिम धधिमक धिपम दु-
पधधिमक धैया ॥ अंकृत गंकृत गमकत घुँघरू थंकृत थं-
कृत थंकृत थैया ॥ ठुमुक ठुमुक पग धरत धराणि पर तन-
ननन बजत वधैया ॥ सकल काम तजि पृथ्वीराज धुनि
बजत मृदंग गति नचत कन्हैया ॥ १ ॥

निरतत फन ऊपर सुनु मैया ॥ सहसरंग चाचरि रचि
मोहन यमुनाके नीरतीर बजत बधैया ॥ गोपिनसंग राधिका
निकसी ज्यों तारन विच सहत जुन्हैया ॥ प्रकटिक ताल
तान मन मोहत सहस रंग बाजै सहनैया ॥ गृगीतं गृगीतं
तधुव तधुव ध्वनि बजत मृदंग गति नचत कन्हैया ॥
निरतत फन ऊपर सुनु मैया ॥ १ ॥

ध्रुपद ।

सखी री नाचत कृष्ण गोपी ॥ छौं छौं छना ना ना ना
ना ना ना नाचत कृष्ण गोपी ॥ तमुरा वीन मुरचंग बाजै
फूँक फूँक अबीर उड़ावैं गावैं राग रंग मृदंग बाजा ठुमक
ना ना ना ना ना ना ना राधा देत ताल तारी ॥ मोगरा
चमेली गुलाब सेवती माल कहत वन्सीवारो लाल दास
कृष्ण रंग पाये रास बाजत छौं छना ना ना ना ॥ १ ॥

देखी दामिनि समान कामिनि श्रीयमुना तट झमकि
झमकि चली सो मुख चमकै दमकै लिलार ॥ देखी दामिनि

समान कामिनि धनुष रूप भौं हैं वा नादिर इन वाधनसा बाँधे रसतरकस मृगनैनीखेलतशिकार॥देखीदामिनि समान कामिनि॥ युगल नैनमें डोरा अति सोहैं रूपताल तरुनीनै रेशमके ज़ार॥ देखि दामिनि समान कामिनि॥२॥

खेमटा।

चितवनिमें नयना लगाय आई राम॥ टेक॥ केकर हौ तुम बारी दुलारी केकर नारी कहाय आई राम॥ चितवनिमें०॥राजा जनककर बारी दुलारी रामकी नारी कहाय आई राम॥चितवनिमें०॥ तुलसिदास बलि आश चरणनके झाँकि झुकि रामैनिहारिआईराम॥चितवनिमें नयना लगाय आई राम॥ १॥

बिहारीसे न बोलबै बरु मथुरा नगर तजि देबै॥ टेक॥ दधिबेचन हम जात वृन्दावनधइबहियाँ मोरी तोरी बिहारीसे न बोलबै॥ दधिमोरी खाई मट्ठकि शिर फोरी गेंडुली यमुना बिच बोरी॥ बिहारी०॥सूरश्यामसे एती अरज मोरीछाँड़ि देवे ब्रज खोरी॥ बिहारीसे न बोलबै०॥२॥

ठुमरी।

चले गये दिलके दामनगीर॥ टेक॥ जब सुधि आवै तेरे दरशकी उठे कलेजे पीर, नटवर वेष नैन रतनारे सुन्दर श्यामशरीर, आपन जाय द्वारका छाये खारीनदकेतीर॥ वृंदावन वंशीवट त्यागो निर्मल यमुनानीर॥

ब्रज गोपिनको प्रेम विसारचो ऐसे भये बेपीर ॥ सूरश्याम ललता उठि बोली आखिर जात अहीर ॥ १ ॥

सैयाँपर मरबै जान कटरिया हमैं देव ॥ टेक ॥ व्याहकरि पिया घर बैठायउ अपुना किहेउ पयान ॥ १ ॥ तब मैं रहलीउ बारि गदेलवा अब तो भई हौं जवान॥२॥ सूरश्याम से एतनी अरज मोरी सैयाँसे करदेव मिलान ॥ ३ ॥ २॥

विरहिनीके बारहमासका-दोहा ।

चैतहिं चातक रटत हैं, स्वाति बूँदके हेत ॥
वैसे पिउ पिउ मैं रटौं, और खबर ना लेत ॥ १ ॥
वैशाख विरह बाढो सखी, यौवन धरत न धीर ॥
जो मोहन मिलते सखी, कहती तनुकी पीर ॥ २ ॥
ज्येष्ठ मास लागे सखी, कीजै कौन उपाय ॥
प्यारे पी आये नहीं, वरषा पहुँची आय ॥ ३ ॥
आषाढ मास लागे सखी, आये ना ब्रजराज ॥
मोहिं अकेली छोड़िगे, तनिक न आई लाज ॥ ४ ॥
सावनमें सखि आश करि, साज हिंडोल बनाय ॥
नौसत साजि शृँगार तिय, पिउ मारग दृग लाय ॥५॥
भादौंमें लखिकै घटा, चढ़ी अटा हरषाय ॥
मग हेरत अँग थकित भो, ना आये यदुराय ॥ ६ ॥
क्वार मास फूले सखी, वरषा गई बुढाय ॥
प्यारे पिय आये नहीं, कीजै कौन उपाय ॥ ७ ॥
कातिक शशि पूजत भई, करि अपनो शृंगार ॥

कनकथार करमों लियो, धरि फूलनके हार ॥ ८ ॥
अगहन उद्धवजी मिले, पाती दीन्हों आय ॥
योग लीजिये समुझिके, दीन्हों सकल बताय ॥ ९ ॥
पूस पवन डोलत सखी, सिसकत मेरो अंग ॥
हरि विन सूनी सेजहै, नहिं भावै कछु रंग ॥ १० ॥
माघ मास फूली लता, आयो प्रकट वसन्त ॥
पन्थ निहारत मैं थकी, अजहुँ न आयो कन्त ॥ ११ ॥
फागुनमें सब नारि नर, गावत भरे उमंग ॥
चोवा चन्दन अरगजा, छिरकत केसर रंग ॥ १२ ॥
बारहमास बिताय सखि, तेरहेमें आये श्याम ॥
भगवानदास कर जोरि युग, पूरण भए सब काम ॥ १३ ॥

फगुआ।

अँखियाँ भरि आये नीरकन्हैया कहाँ गयो ॥ टेक ॥ गोकुल ढूँढो वृन्दावन ढूँढो ढूँढी फिरिउँ नँदगाम ॥ १ ॥ काशीढूँढो गयामें ढूँढो ढूँढो राजप्रयाग ॥ २ ॥ सोहर सो सखि वृन्दावन झंखै जाय बसै नद तीर ॥ ३ ॥ सूरश्याम ललिता उठि बोली आखिर जात अहीर ॥ ४ ॥ २ ॥

रामनगरके बासी रे सुगना ॥ टेक ॥ केकरे तटपर अयोध्या नगरी केकरे तटपर काशी रे सुगना ॥ १ ॥ सरयूके तटपर अयोध्या नगरी गंगाके तटपर काशी रे सुगना ॥ २ ॥ कारे करनके अयोध्या नगरी कारे करनके काशी रे सुगना ॥ दान करनके अयोध्या नगरीमरन तरनके काशी रे सुगना ॥ ३ ॥ २ ॥

चौपाई ।

महावीर सुमिरो सब लायक।भयभंजन मनवाँछित दायक ॥ अगणित विघनहरण हनुमाना । सो भरोस मैं मन अनुमाना ॥ दिहिनि मोहि मन प्रभु उपदेशू । सो कहि हौं हिय सुमिरि गणेशू ॥ कहौं हृदय गुरुको धरिध्याना । त्य हिते पावौं निर्मल ज्ञाना ॥ विनती एक कहौं समुझाई । ज्यहिं विधि हम भव पारै जाई ॥ आयो कलियुग महा अपारा । मायामें फँसि मुयो सँसारा ॥ दया धर्म कर डगर भुलाई । साधु निरादर जहँ चलिजाई ॥ दाया रहित सकल संसारा । कोउ न आतम करहिं विचारा ॥ ३ ॥

दोहा—अरज हमारी सुनहु प्रभु, कृष्णचन्द्र महराज ॥
मैं तो निपट गँवार हौं, राखो मेरी लाज ॥ १ ॥
भगवानदास करजोरि कह सब संतन शिरनाय ॥
अक्षर जोड़ कै पिंगलै, दीजै प्रभू बताय ॥ २ ॥

चौपाई—लखचौरासि योनिनमें जाई । भय कलेश नाना विधि भाई ॥ बार बार तव टेर सुनाई । भई दया मानुष तनु पाई ॥ जन्मत कै माया लपटानी । धन दौलत सुत तिया सयानी ॥ यहिमें फँसिके जन्म गँवाई । ये सब कोई संग नहिं जाई ॥ देखो टुक तुम पलक उघारी । माया जाल सकलसंसारी ॥ सबकोतजैरामरटलावै । सो नरस्वपने दुःख न पावै ॥ बालापनाहिं धर्म मन लावै । सुखी रहै दुख कभी न पावै ॥ त्रेता धर्म करै जग माहीं । ह्यां सुख बहुत वहाँ दुख

नाहीं ॥ धर्म कर्म कर करै विचारा। सो पूरुष कलिमें विस-तारा ॥ धन स्त्री पुत्रसे जो वाहर होई। फिर फिर जन्म न इनमें होई ॥ अन्तकाल वैकुंठमें जावै ॥ राम राम ध्यान जो लावै ॥ जगमें बुद्धिमान है सोई। जाके मोह क्रोध नहिं होई ॥ भगवानदास यह कहै पुकारी ॥ अव प्रभु करहु पगनसे न्यारी ॥ चरणकमलपर शीश नवावों ॥ राम राम निर्मल पद गावों ॥ केतनो करै जो लाख उपाई। विन रघुवीर पार नहिं पाई ॥ वार वार मैं वचन सुनाई। सज्जनपुरुष सुनो मन लाई ॥ भूल चूक क्षमा करो मोरी ॥ विनती करों दुहूँ कर जोरी ॥ ४ ॥

भजन।

जो प्रभु मेरी चूक विसारो ॥ टेक ॥ मैं तो अघी अनेक जन्मको नख शिख भरो विकारो ॥ सुर नर मुनी ध्यान नहिं छूटै सुधि विसरे न विसारो ॥ १ ॥ जलधर धार भार जग धिशको गनि नहिं जात गनारो ॥ जो काहूं आहूं गनि डारो अवगुण गनत हमारो ॥ २ ॥ कागज भूमि सिंधु मसिआनी गिरि कज्जल मिसि डारा ॥ सुरतरुवरकी बनी लेखनी लि-खत शारदा हारा ॥ ३ ॥ राम अनन्त कहाँतक वरणों वेद न पावत पारो ॥ तुलसिदास प्रभु आश चरणकी प्रभुके चरण चित धारो ॥ ४ ॥ १ ॥

सुनहु भरत दै कान सुयश हनुमान वलीको ॥ गिरि सु

वल पर्वतके ऊपर शयन करत द्वौ भाई ॥ चारोंओर वीर सव बैठे दिये लँगूर फहराई ॥ चौकी कठिन कपीशकी जहँ पवनौकी गम नाहीं ॥ कौने वीर कौन मारगसे हरत नृपति क्षण माहीं ॥ सुयश० ॥ १ ॥ सारी रैनगई वीति लागि लो-हिया पैठारी ॥ शब्द किलकिला जोर वाज वीरनकी तारी ॥ चौंकि उठे पवनसुतनन्दन आसन देख्यो सून ॥ लज्जित भये मुख वात न आवत दलित भये दुख दून ॥ सुयश० ॥ ॥ २ ॥ कोपे पवनकुमार आज नभ नखसे फारौं ॥ शशि मेरो मंडार इक्षुसे उक्ष पवारौं ॥ शपथ करौं रघुनाथकी की जनु अंजनिसुत नाहिं ॥ तीनहुँ लोक विलोकौं प्रलय करौं क्षण माहिं ॥ सु० ॥ ३ ॥ डोलत मेरु सुमेरु श्रवण सुनि शेषश काने ॥ सहि न जात महिभार आज वलवान रिसाने ॥ कंपित भये सव देवता मारग दीन्ह वताय ॥ पटकि लँगूर वीर अति गर्ज्या पैठि पतालहिं जाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ देखत नगर अनूप भूप घर वजत वधाई ॥ जमकातरि यमराज नृपति द्वारे घहराई ॥ मायादेवी टारिके प्रभु वैठे वदन छपाय ॥ मधुमेवा पकवान मिठाई आप प्रकट होय खाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ वलि देवनके भये कुँवर दोनों नहवाये ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा पीताम्वर पहिराये ॥ खैंचि खड्ग हाथमें लीन्हों सुमिर आपनो नाथ ॥ जो यहि अवसर आय उवारै नाहिं छीनौं द्वौ माथ ॥ सु० ॥ ६ ॥ पहिले सुमिरे गुरू आपनो पिताचरण चित लाय ॥ कौशल्याके धर्म मनावत राखत

हृदये लाय॥ फिर सुमिरे हठ नामके जोगाढ़े आवै काम।
तारा तरन सदा संतनके मारुतसुत कर नाम ॥ सु० ॥
॥ ७ कोपे पवनकुमार मेघध्वनि गर्ज सुनाये ॥ दुर्जन दलि मलि दिये गर्भिणी गर्भ नशाये॥ मारचो असुर संहारि क्रोधसे दियो बहाय॥ रुधिरनसे सरिता वहि निकली मांस माटी होजाय॥ सु० ॥ ८ ॥महिरावनवध कियो राम कट-कहिले आयो॥ भयो कटकमें शोर सुरन दुदुंभी बजायो॥ सेवक सीतारामके तुलसी परम अजीत॥ जोयह पद दृढ़ हृदयसे गावै परम हमारो मीत॥ ९॥

त्रिभंगी छन्द।

विन पंडित ग्रंथ प्रकाश नहीं विन ग्रंथ न पावत खण्डित भाहै॥ जग चन्द्र विना न विराजति यामिनि यामिनिहू विन चन्द्र अभाहै॥ सु सभाहिके देखेते साधुता होती साधुहीते शुभ होती सभा है॥ छवि पावतहै मधु माधवी ते मधुको अति माधवीहू शोभा है ॥ महिमागुणवंतकी दास बढै वकसै जव रीझिकै दान जवाहिर॥ गुणवंतहुंते पुनि दानिहुँको यश फैलत जात दिगंतके वाहिर॥ जिमि मालती सों अति नेह निवाहेते भौंर भयो रसिकाई मैं जाहिर॥ अरु भौंरहुँको अति आदर कीन्हें सुवास मैं मालती यों भइ माहिर॥

चौपाई।

सावन मास पक्ष उजियारा। तिथि सप्तमी दिवस रविवारा॥ संवत उनइस सौ उनचासा। अठारसौ बानवे सन ईसा॥ भगवानदास कहै शिरनाई। कृपासिंधु हरि कीन सहाई॥ रच्यो ग्रंथ श्रम कीन्ह अपारा। विविध भाँति करि यत्न विचारा॥ जो कुछ पावो शब्द विरुद्धा। सज्जन पुरुष करो सो शुद्धा॥

दोहा–सन संवत दोनों यही, जानत सकल जहान।
राधापदको ध्यान करि, कियो ग्रंथ सुखखान॥

इति होलीचौताल संग्रह सम्पूर्ण।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाडी–बंबई.

indianmanuscripts.com